ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक १८ मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र सितम्बर (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य

२० जून से १४ अगस्त तक चल रहे वृष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १९
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-
विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

अक्टूबर प्रथम २०१६

अनुक्रम

०१. शैल्डन पोलॉक का शोध- संस्कृति...	सम्पादकीय	०४
०२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
०३. श्री दुलीचन्द जी जैलदार- शुद्धि...	धर्मेन्द्र जिज्ञासु	१४
०४. १३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		१७
०५. आत्मा का स्थान-२	स्वामी आत्मानन्द	१८
०६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२०
०७. परमपिता ही मेरे रक्षक हैं		२१
०८. संस्था-समाचार		२५
०९. कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?		३२
१०. प्रत्युत्तर-अथ-सृष्टि उत्पत्ति.....	आचार्य दार्शनेय	३७
११. वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय		४०
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-४१		४१
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

शैल्डन पोलॉक का शोध-
संस्कृति का शीर्षासन

चार सितम्बर के दिन कर्नाटक यात्रा के प्रसंग में हम्पी भ्रमण करते हुये विजय नगर साम्राज्य के खण्डहर देख रहे थे। विरुपाक्ष मन्दिर, मन्दिर समूह, कृष्ण मन्दिर, विट्ठल मन्दिर, अच्युतराय मन्दिर देखते हुए एक मुस्लिम शासक निर्मित भवन दिखाई दिया। उसके परिचय में लिखा हुआ था- 'एक सैक्यूलर इमारत' पढ़कर हृदय गदगद हो गया। इस देश की नई शब्दावली से परिचित हुये बिना यहाँ की और इस देश को लेकर सोचने वालों की मानसिकता को नहीं समझा जा सकता। इस देश में पीड़ित को साम्प्रदायिक और आक्रान्ता को सैक्युलर, धर्म-निरपेक्ष, समाजवादी और उदार कहा जाता है।

आजकल हमारे तथाकथित प्रगतिशील लोगों की यह शब्दावली है जहाँ शब्द भी उनका भी दिया अर्थ बताते हैं। वास्तविक अर्थ कुछ रहा होगा तो रहे, परन्तु आज तो यही अर्थ ठीक है। वेद, शास्त्र, हिन्दू, ब्राह्मण आदि ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थ होता है- शोषक, उत्पीड़क, रुढ़िवादी, स्त्री-विरोधी, दलित-विरोधी, अल्पसंख्यक-विरोधी, असभ्य, असंस्कृत आदि। यदि कोई मुसलमान की बात हो, चाहे औरंगजेब हो, अकबर हो, गजनी हो, खुदा हो, कुरान हो या पैगम्बर हो, उनका अर्थ होता है- सैक्युलर, उदार, समन्वयवादी आदि। कहीं अंग्रेज, अंग्रेजी, विदेशी शोधकर्त्ता का नाम आ जाये तो अर्थ होगा प्रगतिशील, वैज्ञानिक दृष्टिवाला, दयालु, परोपकारी आदि। ऐसे शब्द आजकल के सुपठित लोगों की भाषा में इन्हीं अर्थों में आते हैं।

इन शब्दों का उदारता से व्याख्यानपूर्वक प्रयोग देखना हो तो आजकल के महान् शोधकर्त्ता कोलम्बिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सर शैल्डन पोलॉक हैं। जिनका बहुत सारा शोध कार्य है, परन्तु रामायण को उन्होंने जिस दृष्टि से देखा है वह इस शब्दावली से समझा जा सकता है। शैल्डन पोलॉक के शोध के अनुसार वेद निरर्थक हैं (मीनिंग लेस) बाकि जितने भी शास्त्र हैं इनमें अपना कुछ नहीं है, ये सब वेद से दबे हुए हैं। बाद के काव्य, व्याकरण आदि राजाओं के प्रभाव को स्थापित करने, जनता को दबाने, उनका शोषण करने के लिए ब्राह्मणों द्वारा लिखे गये। इसका एक उदाहरण रामायण है। रामायण कोई इतिहास नहीं है। राम नाम का कोई व्यक्ति नहीं हुआ। राम के नाम पर राजाओं के प्रभाव को बढ़ाने और जनता को दबाकर रखने के लिये वाल्मिकी ने इस की रचना की है।

शैल्डन पोलॉक का शोध दूर की कौड़ी है। श्लोकों का अर्थ मनमाना और अप्रासंगिक है। तटस्थ अध्ययनकर्त्ता यदि ग्रन्थकर्ता की एक बात को प्रस्तुत करता है तो उसके विपरीत बातों को भी उद्धृत करना उसका कर्त्तव्य बनता है। पोलॉक महाभारत का श्लोक उद्धृत कर कहता है कि संस्कृत ग्रन्थों में राजा के माहात्म्य को बढाने के लिये उसे भगवान् का रूप दिया गया है। ऐसा करने के पीछे उद्देश्य यह है कि कोई राजा का विरोध न कर सके और राजा अपने को भगवान् मानकर प्रजा पर मन मरजी चला सके। प्रजा का शोषण कर सके। पोलॉक के विचार से सारा संस्कृत साहित्य राजाओं के द्वारा अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए ब्राह्मणों के माध्यम से कराया गया प्रयास है। पोलॉक का विचार है कि पूरे संस्कृत साहित्य में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिसमें मनुष्य की स्वतन्त्रता, बौद्धिकता, समानता की बात दिखाई पड़ती हो। उसके विचार से हिन्दुओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव इन संस्कृत ग्रन्थों द्वारा बौद्धिक स्वतन्त्रता को बन्धक बनाये जाने के कारण है। वेद या शास्त्रों में आध्यात्मिकता की बात करना निरी मूर्खता है। वेद, शास्त्र, संस्कृत साहित्य दलित-विरोधी, स्त्री-विरोधी और अल्पसंख्यक विरोधी है। पोलॉक का मानना है कि रामायण के माध्यम से शासकों ने प्रजा के मन में मुस्लिम विरोधी भावनाओं को भड़काने का कार्य किया है। वह यहाँ तक कहता है कि भाजपा या विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा रथ-यात्रा निकालना हिन्दुओं के मन में रामायण के माध्यम से मुस्लमानों के प्रति शत्रुता का भाव उत्पन्न करने का प्रयास है।

पोलॉक रामायण को मुस्लिम विरोध के लिये लिखवाया ग्रन्थ कहकर दो बात सिद्ध करना चाहता है, **एक**- राम नाम का कोई इतिहास में व्यक्ति ही नहीं हुआ, उसके आदर्श राजा होने की बात तो बहुत दूर है। **दूसरी** रामायण की रचना का समय वह इस्लाम के भारत आक्रमण के बाद का सिद्ध करना चाहता है। यह ग्रन्थ के साथ और इतिहास की परम्परा के साथ भी मनमानी है। इस्लाम के उत्पन्न होने से पहले ही रामायण का विश्व में प्रचार प्रसार हो चुका था। जहाँ इस्लाम का जन्म चौदह सौ वर्ष पुराना है तो रामायण के चित्रों का प्रदर्शन ब्राह्मीलिपि के साथ तीन हजार वर्ष से भी पुराना मिलता है। चीन, तिब्बत, लंका, मलेशिया, इन्डोनेशिया आदि देशों में रामायण का प्रचार-प्रसार वहाँ इस्लाम के पहुंचने से पहले ही पहुँच चुका था। साहित्य में हजारों ग्रन्थ ऐसे हैं जिनकी रचना रामायण के आधार पर की गई है। रामायण इन ग्रन्थों का उपजीव्य है।

शैल्डन पोलॉक का शोध है कि रामायण में राक्षस शब्द मुसलमानों के लिये प्रयुक्त हुआ है। संस्कृत साहित्य में मुसलमानों के लिये यवन शब्द तो देखने में आता है पर किसी भी शब्दकोश में राक्षस का अर्थ मुसलमान देखने को नहीं मिलता। वैदिक साहित्य में दो ही वर्ग देखने में आते हैं। इनमें एक को आर्य कहते हैं दूसरे को दस्यु कहा जाता था। दस्यु के लिये भी अनार्य शब्द का प्रयोग मिलता है। ये दोनों शब्द एक वर्ग के लोगों के लिये प्रयुक्त होते थे, क्योंकि ये शब्द गुणवाचक हैं न कि जाति के वाचक। संस्कृत साहित्य में दस्यु शब्द का अर्थ करते हुये कहा गया है 'अकर्मा दस्युः' जो पुरुषार्थ न करके निर्वाह करना चाहता है वह दस्यु है। वह कोई भी हो सकता है। जिन का आचरण आर्योचित या मर्यादा रहित होता था, उनके लिये म्लेच्छ शब्द का प्रयोग देखा जा सकता है। जहाँ तक राक्षस शब्द की बात है। राक्षस शब्द बहुत पुराना है, वेद में भी प्रयुक्त हुआ, प्रारम्भ में इसका अर्थ बुरा नहीं था, बाद में बुरे अर्थ में प्रयुक्त होने लगा है। राक्षस का अर्थ किसी भी रूप में मुसलमान अर्थ में रामायण में प्रयुक्त नहीं हुआ है।

रामायण में राक्षस वंशों का वर्णन मिलता है। राक्षसों के नाम, स्थान, वंश, क्षेत्र आदि का उल्लेख रामायण में विस्तार से पाया जाता है। ऐसी स्थिति में रामायण के राक्षस शब्द से मुसलमान अर्थ लेना- यह मनमानापन शोध तो नहीं कहा जा सकता है। शैल्डन पोलॉक का मानना है कि बुद्ध से पहले हिन्दुओं को लिखना-पढ़ना नहीं आता था। पोलॉक का शोध कहता है कि रामायण की रचना बौद्ध जातक कथाओं की नकल पर की गई है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है रामायण बुद्ध से पूर्व भी इस देश में प्रचलित थी। इसके अनेक प्रमाण मिलते हैं। सोचने की बात है कि सब कुछ इस देश में बुद्ध के बाद आया तो बुद्ध से पहले यहाँ क्या था। इतना ही नहीं, बुद्ध ने जो कुछ जाना-सीखा वह सब कहाँ से सीखा। बौद्ध-दर्शन यदि वैदिक दर्शन का खण्डन करता है तो वैदिक दर्शन की उपस्थिति बुद्ध से पहले हुए बिना खण्डन कैसे हो सकता है। जैन, बौद्ध साहित्य में ब्राह्मणवाद का खण्डन बताया जाता है तो ब्राह्मण धर्म बुद्ध से पहले था तभी तो खण्डन किया जा सका। जब कोई विचार किसी विचार की प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न होता है तो जिसके लिये विरोध या प्रतिक्रिया हुई है, उसका पहले स्थापित होना तो स्वतः सिद्ध होता है। फिर यह कहना कि वेद से लेकर पुराण तक की रचना बुद्ध काल के बाद हुई है- युक्ति संगत नहीं कहा जा सकता। संस्कृत साहित्य में काल निर्णय की समस्या चार कारणों से उत्पन्न होती है। **प्रथम** है नाम साम्य-एक ही नाम के अनेक व्यक्ति विभिन्न समय और स्थानों पर होते रहे इसलिये उनका काल निर्णय करना बहुत कठिन हो जाता है। **दूसरा** कारण है- वेद को छोड़कर समस्त शास्त्रीय साहित्य में समय-समय पर मिलावट होती रही है, जिस कारण ग्रन्थ के मूलपाठ को प्रक्षेप से पृथक् करना एक कठिन और चुनौती वाला कार्य है। **तीसरा** कारण- भारत में क्रमबद्ध इतिहास लिखने की परम्परा बहुत कम मिलती है। हमारे देश में रामायण व महाभारत को छोड़कर बचे इतिहास ग्रन्थ कम ही मिलते हैं। इतिहास के लिये पुराणों का अध्ययन आवश्यक है, परन्तु इनमें मिलावट होने के कारण तथ्यों को छांटना कठिन कार्य है। फिर **चौथा** कारण है- इस देश की दासता की लम्बी अवधि और मुसलमानों द्वारा साहित्य को जलाना और

अंग्रेज, डच, फ्रेंच आदि द्वारा साहित्य, संस्कृति कला की वस्तुओं को इस देश से उठा ले जाना। ऐसी परिस्थिति में इतिहास न होने का दोष किसे दिया जा सकता है। रामायण में भी प्रक्षेप हैं जिसका लाभ पोलॉक उठाना चाहता है। रामायण में एक श्लोक आता है-**यथा हि बुद्धस्तथा हि चौर**- जैसा बुद्ध वैसा चोर, जैसी पंक्तियों के आधार पर आप रामायण को बुद्ध के बाद बताना चाहते हैं, पर पहले रामायण की प्राचीनता को प्रतिपादित करने वाले प्रमाणों का खण्डन करना होगा। जिसे शैल्डन पोलॉक का शोध स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है।

एक और महत्त्वपूर्ण शोध कार्य शैल्डन पोलॉक ने किया है, उस पर भी दृष्टिपात् करना उचित होगा। शैल्डन पोलॉक अपने शोध कार्य से इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि रामायण हिन्दुओं की मरी हुई, दबी-कुचली इच्छाओं, अपूर्ण-दामित कामवासनाओं को काव्य के माध्यम से प्रकाशित कर सन्तुष्टि पाने वाला ग्रन्थ है। इसमें दबी इच्छाओं और उनको पूर्ण करने में आने वाले भय का निरुपण किया गया है। शैल्डन पोलॉक की दृष्टि में हिन्दू समग्ररूप से विकृत काम-वासना से ग्रसित समुदाय है। यह पोलॉक ही नहीं, बहुत सारे योरोपियन अमेरिकन वर्ग के लेखक भी कहते हैं, पिछले दिनों वेन्डीडोनिगर की एक पुस्तक निकली 'हिन्दू-एन ऑल्टरनेटिव हिस्ट्री'। इस पुस्तक में क्या होगा इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि पुस्तक के मुख पृष्ठ पर एक नग्न महिला पर चढ़कर कृष्ण को बांसुरी बजाते हुये दिखाया गया है। यह मनोविकृति कृष्ण की है या हिन्दुओं की अथवा वेन्डिडोनिगर और उनके साथी यूरोप, अमेरीकी शोधकर्त्ता की- यह समझना कठिन नहीं है।

पोलॉक के शोध में सारा प्रयास यह दिखाई देता है कि वह समाज को टुकड़ों में बँटा हुआ और एक-दूसरे के विरोध में खड़ा हुआ देखना चाहता है। वह संस्कृत को क्षेत्रीय भाषाओं के विरोध में, बौद्धों को हिन्दुओं के विरोध में, हिन्दुओं को मुसलमानों के विरोध में, पुरुषों को स्त्रियों के विरोध में, ब्राह्मणों को दलितों के विरोध में, सवर्णों को शूद्रों के विरोध में खड़ा करना चाहता है। सारे प्रयत्न उसके शोध के निष्कर्ष के रूप में दिखाई देते हैं। इस समाज में पोलॉक को सब कुछ खराब और घटिया दिखाई देता है। उसकी सद्भावना इतनी ही है कि वह हिन्दू समाज को इस कलंक से दूर करना चाहता है, इसलिये वह इस समाज को संस्कृत से बचने और दूर रहने की सलाह देता है, जिससे यह समाज बौद्धिक स्वतन्त्रता का अनुभव कर सके और योरोप-अमेरीका के शोध कर्त्ताओं का धन्यवाद कर सके, उनके आदर्शों पर चलकर अपना जीवन धन्य मान सके।

इस सारी शोध मानसिकता की भूमि में जो बात है वो ये कि जब संस्कृत के विचारों की शोपनहावर ने प्रशंसा की तो वह भारत पर राज्य करने वाले अंग्रेजों को अच्छी नहीं लगी। एक ओर उन्हें भारत में पैर जमाने के लिये ईसाइयत के प्रचार-प्रसार में आने वाली मुख्य बाधा संस्कृत और वेद के रूप में आ रही थी। दूसरी ओर ऊपर से योरोप में संस्कृत के, वेद-ज्ञान के प्रशंसक हों यह उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगा। इसके बाद सर विलियम जोन्स ने संस्कृत का अध्ययन किया, उसमें वो अपनी नस्लीय श्रेष्ठता और बाइबिल की उच्चता को अपने मस्तिष्क से नहीं निकाल सके और इसी मानसिकता को लेकर उन्होंने जो शोध किये, पोलॉक उसी परम्परा का निर्वाहक है।

यह संस्कृत भाषा और साहित्य का अध्ययन पहले संस्कृति स्टडी फिर तुलनात्मक व्याकरण (कम्पेरेटिव ग्रामर) कहा गया। बाद में इसका नाम भाषा विज्ञान (लिंलिंग्विस्टिक) हुआ। फिर भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन के रूप में इन्डोलॉजी कहा गया। आजकल इस अध्ययन को दक्षिण एशिया के अध्ययन के रूप में साउथ एशियन स्टडी कहा जाता है। इस अध्ययन की एक ही विशेषता है, यह सारा अध्ययन शोध के लिये न होकर अपने प्रयोजन को सिद्ध करने के लिये किया जा रहा है। पहले योरोप और इंग्लैण्ड के विद्वानों ने इस अध्ययन से संस्कृत, भारतीय संस्कृति और इतिहास को अपनी तरह से व्याष्यायित करके भारतीयों को पढ़ाने का काम किया। अब अमेरिकी विद्वान् शैल्डन पोलॉक जैसे लोग भारत के संस्कृत इतिहास, संस्कृति, भाषा के विषय

में हमें बताने का प्रयास कर रहे हैं।

इस सारे शोध और अध्ययन की विशेषता है- भाषा भारत की, संस्कृति यहाँ की इतिहास भारतीयों का, परम्परा भारतीयों की और निर्णायक हैं मैक्समूलर और शैल्डन पोलॉक। किसी देश की इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है कि उसके साहित्य, इतिहास, संस्कृति की व्याख्या करने का अधिकार विदेशी और शत्रु के हाथ में हो।

यह अधिकार उन्होंने अपने हाथ में बलपूर्वक ले लिया है, क्योंकि उन्होंने इस अपने से जोड़ने वाली वस्तु भाषा को हम से छीन लिया । आज हम हमारे विषय उनकी भाषा में पढ़ते हैं तो फिर वो जैसा चाहते है। उसे वैसा ही पढ़ना और समझना भी पड़ता है, इसे कहते हैं- मियाँ जी की जूती, मियाँ जी का सर। आज हम संस्कृत को भी उन्हीं की पद्धति से पढ़ते हैं। मनुष्य अपनी भाषा बोलना और समझना पहले सीखता है। लिखना और पढ़ना बाद में आता है पर अंग्रेज हमको संस्कृत लिखना-पढ़ना पहले सिखाता है। बोलना समझना हमें आता नहीं। इसी आधार पर वह कहता है कि जिसमें बोला न जाय और बोला हुआ समझा न जाय- वह भाषा मृत भाषा है।

अन्त में शैल्डन पोलॉक का शोध समझाता है कि रामायण में कुछ भी अच्छा नहीं, सम्भवत: यह विचार भी नहीं-

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

- धर्मवीर

न्याय दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि गौतम**' द्वारा प्रणीत '**न्याय दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा १ मार्च २०१६ से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ९-१० महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय-समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र - आचार्य सत्यजित् जी - ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता - ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर - ३०५००१ (राज.) **ई-मेल** - styajita@yahoo.com

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है। **- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१**

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

वैदिक धर्म की दिग्विजय का प्रचार हो:- कई बन्धु पूछते हैं कि इस युग में वैदिक धर्म का प्रचार कैसे हो? वैदिक धर्म की मूलभूत मान्यताओं का युक्ति व प्रमाण से प्रचार करने ही से वैदिक धर्म का प्रचार होगा। वैदिक धर्म के प्रचार में सबसे बड़ी बाधा हिन्दुओं के अंधविश्वास हैं। आज कुछ लोग एक-एक कुरीति को संस्कृति के नाम पर महिमा मण्डित कर रहे हैं। विरोधी जोर-शोर से प्रचार कर रहे हैं कि भागवत आदि ग्रन्थों के मानने वाले करोड़ों हिन्दू यह स्वीकार करते हैं कि पेड़ पूजा, नदी पूजा, मनुष्य पूजा, पर्वत पूजा, जड़ पूजा सनातन है, सदा से है। हिन्दुओं में कभी एक ईश्वर की उपासना नहीं रही। कहिये इसके होते कैसे धर्म रक्षा हो। और भगवान तो थे ही, अब घने सयाने लीडरों ने एक '**बर्फानी बाबा**' को महिमा मण्डित व प्रचारित कर रखा है। हमने तो '**बर्फानी बाबा**' शब्द ही कभी नहीं सुना था।

एक विरोधी ने लिखा है कि परमात्मा के साथ जीवात्मा व प्रकृति को मानने वालों का भगवान न तो प्रकृति का एक कण उत्पन्न कर सकता है और न एक जीव ही बना सकता है। जीव व प्रकृति का अनादित्व गीता, दर्शन व उपनिषद् सब मानते हैं। इस आक्षेप का उत्तर केवल आर्य समाज ही दे सकता है। धर्म व संस्कृति की दुहाई देने वाले तो सब चुप्पी साधे रहते हैं।

विज्ञान प्रकृति को अनादि स्वीकार करता है। जब प्रकृति व ईश्वर अनादि है तो जिसके लिए जगत् रचा गया है, तो वह जीव कैसे अनादि नहीं? डॉ. इकबाल जब जीवन का अन्त नहीं मानता तो उसका अनादि होना मौलाना महबूब अली को मान्य है। डॉ. गुलाम जेलानी स्पष्ट शब्दों में धर्म को अनादि स्वीकार करता है। अनादि धर्म (ईश्वरीय ज्ञान) किसके लिये है? मानना पड़ता है कि अनादि जीवों के लिये। क्या सृष्टि में कभी नया Matter (उपादान कारण) उपजते देखा गया है? ऐसे ही कोई नया जीव भी उत्पन्न नहीं होता।

एक नये नबी मिर्जा कादियानी ने वैदिक धर्म व हिन्दुओं पर घने प्रहार करते हुए यह लिखा है कि खुदा जैसा आसमान पर, वैसा ही भूमि पर है अर्थात् सर्वव्यापक है। यह भी लिखा है कि जब **तीन मिलकर विचार करते हैं तो चौथा खुदा भी सब जान लेता है। कुछ भी गुप्त नहीं उससे।** कहिये! यह ऋषि की कृपा का फल है या नहीं। वेद मन्त्र नबी के मन में कैसे घुस गया? नबी ने बात-बात पर फरिश्तों का ढोल पीटा। पं. लेखराम का हत्यारा फरिश्ता ही तो था? कादियाँ फरिश्ते आते- जाते रहते थे। नबी ने 'नसीमे दावत' पुस्तक को **वेद के देवता घोषित कर दिया है।** चलो! वेद ने अल्लाह की लाज रख ली। नबी ने यह भी माना है कि अल्लाह का तख्त अर्श **पर कोई भौतिक पदार्थ नहीं है। अल्लाह का तख्त फरिश्तों ने नहीं उठाया। फरिश्तों से अभिप्राय अल्लाह के चार गुण हैं। अल्लाह आसमान पर नहीं बैठा है**-ऐसे अनेक कथन हैं, यहाँ क्या-क्या लिखें?

आर्यो! वैदिक धर्म की दिग्विजय का पूरे दलबल से प्रचार करो। हीन भावना से ग्रस्त, जातिवाद में फँसा-धँसा हिन्दू जगत् को मिथ्या व स्वप्न मानता है। वह झूठे जगत् का क्या उपकार करेगा? कब इसकी नींद टूटेगी। जब तक नींद में है, स्वप्न भी नहीं टूट सकता। उठो! उत्साह से, चाह से वेद की दिग्विजय का डंका बजाओ।

जब आर्यों में अदम्य उत्साह था:- देश भर के पाठकों, विशेष रूप से युवकों की माँग पर हर बार कुछ प्रेरक प्रसंग देने का प्रयास किया जाता है। प्रत्येक घटना सप्रमाण ही दी जायेगी। प्यारे ऋषि के जीवन में एक लाला मुरलीधर जी का नाम आता है। वह हमारे इतिहास पुरुष थे, परन्तु लोग उन्हें कतई भूल गये। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री भी रहे। सन् १८९१ में लाहौर में एक महत्त्वपूर्ण विधवा विवाह हुआ। तब यह एक साहसिक क्रान्तिकारी कार्य था। बहुत विरोध का सामना करना पड़ता था। वर-वधू सुपठित बंगाली थे। दूल्हा बाबू प्राणचन्द्र

मुखर्जी सेंट स्टीफन कॉलेज दिल्ली में विज्ञान के प्राध्यापक थे। यह विवाह न तो वर-वधू के गृह पर और न ही समाज मन्दिर में हुआ। विवाह का स्थल ला. मुरलीधर का निवास था। भारी संख्या में दर्शक टोलियाँ बनाकर समय से बहुत पहले लालाजी के निवास पर आने लगे। सायं सात बजे से दस बजे तक पूर्ण वैदिक रीति से यह विवाह सम्पन्न हुआ। यह घटना सन् १८९० के अन्त की है। सन् १८९१ के दस जनवरी के आर्य दर्पण में छपी मिलती है। हिन्दू समाज विधवा विवाह के लिये उत्साह न दिखा पाया। आर्य समाज की बात देश ने अनसुनी कर दी। जिसका दुष्परिणाम हिन्दुओं का ह्रास है।

वह माता धन्य थी-वह परिवार धन्य था:- उन्नीसवीं शताब्दी के एकमेव महापुरुष ऋषि दयानन्द हैं, जिनका पत्र-व्यवहार सबसे पहले छपा। महर्षि दयानन्द ही इस देश के पहले और एकमेव विचारक हैं, जिनके पत्र-व्यवहार में कई क्रान्तिवीरों के महत्त्वपूर्ण पत्र मिलते हैं। धन्य थे वे आर्य विद्वान् जिन्होंने सरकारी कोप की चिन्ता न करके ऐसे सब पत्र सुरक्षित हम तक पहुँचाये। ऐसे पत्रों में प्रसिद्ध क्रान्तिवीर हुतात्मा प्रतापसिंह के दादा श्री कृष्ण सिंह राष्ट्रवीर के पत्र भी हैं। जब यह परिवार भारत माता की बंधन कड़ियाँ काटने में लगा हुआ था, तब सरकारी दमनचक्र के कारण परिवार के एक-एक सदस्य पर उत्पीड़न व यातनाओं की बिजलियाँ गिर रही थीं। यह एक दर्दनाक कहानी है। क्रान्तिवीर प्रतापसिंह बारहट की माता वीराङ्गना माणिक कँवर के लिये तब कोई ठौर ठिकाना न रहा। उसकी सुधी लेने वाला, बात पूछने वाला और उससे बात करने वाला कोई नहीं था। वह आर्य ललना प्रत्येक विपदा का सामना करती रही। वह डगमगाई व घबराई नहीं। धन्य है भारत माता, जिसने ऐसी तपस्विनी देवी को जन्म दिया।

गोराशाही ने कारागार में बन्द प्रताप को माँ की दुर्दशा का वृत्तान्त सुनाकर क्रान्तिकारियों के भेद खोलने का अन्तिम दाँव खेला। उसने कहा, ''कल सोचकर बताऊँगा।'' इतिहास ने फिर अपने आपको दोहराया। जैसे अपने नन्हें-नन्हें भूखे बच्चों की दुर्दशा देखकर महाराणा प्रताप तब नहीं डोला था। वीरवर प्रताप बारहट भी हिमालय सदृश अडिग रहा। मृत्यु से पूर्व उसकी वीर माता माणिक कँवर तथा क्रान्तिकारी पिता दोनों ने यह वसीयत की कि गुरुदेव ऋषि दयानन्द की आज्ञा के अनुसार हमारी अस्थियाँ भी खेतों में डाली जायें। इन्हें गंगा में प्रवाहित करने की अंध परम्परा को हम नहीं मानते।

हैं मरकर भी औरों के काम आने वाले।
तपस्वी वे जन-जन के सेवक निराले।।

एक नया दस्तावेज हाथ लगा:- अभी इन्हीं दिनों एक नये दस्तावेज से आर्य सत्याग्रह हैदराबाद विषयक निजामशाही के कुछ नये फरमानों व नीतियों का पता चला है। आर्य समाज के किन-किन व्यक्तियों व कार्यों से निजामशाही दुखी व परेशान थी-यह इस दस्तावेज से और जानकारी मिली है। सत्याग्रह से बहुत पहले हुतात्मा श्याम भाई की प्रेरणा से हमारे पूज्य पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री दक्षिण की आग में जा कूदे। आपने प्रचार विभाग को सम्भाला। एक के पश्चात् दूसरी पत्रिका निकालकर निजाम के दुष्प्रचार की पोल खोलते रहे। हमारे इतिहास पुरुष पं. त्रिलोकचन्द जी की लेखनी निजाम को चुभती थी। हुतात्मा वेदप्रकाश पर पहला गीत व पहला सम्पादकीय आपने ही लिखा था। निजाम के दस्तावेज से अभी पता चला है कि इस लेख से निजामशाही तिलमिला उठी। यह लेख शासकों को चुभ गया। यह भी सत्याग्रह के दमन-दलन का एक कारण बना।

यह ऐतिहासिक लेख हमारे पास है। पण्डित जी इस सेवक के एक निर्माता, बड़े भाई व गुरु थे। कादियाँ के स्वर्गीय आर्य युवक समाज के सब सदस्यों को जहाँ-जहाँ वे हैं यह जानकारी प्राप्त कर अत्यन्त गौरव होगा। प्रादेशिक सभा पण्डित जी को कब का भुला चुकी है। उनकी याद हमारे हृदयों में हरी-भरी रहेगी। प्राचार्य रमेश जीवन, श्री डॉ. ऋषिकुमार आर्य, प्रिय नानक प्रो. रमेश मल्हन अमरीका तथा गुंजोटी, औराद व मराठवाड़ा के सब आर्यों की छाती इस तथ्य के अनावरण से अभिमान से फूलेगी। पण्डित जी की लौह लेखनी ने हम सबका सिर ऊँचा कर दिया। निजामशाही को हिलाने-कम्पाने वाले उस मस्ताने दीवाने

पं. त्रिलोकचन्द जी शास्त्री का जय-जयकार।

एक और नया दस्तावेज मिला:- इन्हीं दिनों हमें ११३ वर्ष पुराना एक और महत्त्वपूर्ण दस्तावेज प्राप्त हुआ है। एक सज्जन ने उस काल के देश के कई बड़े व्यक्तियों के जीवन पर कुछ ठोस लेख लिखकर उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाया। इस पुस्तक में पं. गणपति शर्मा जी आदि कुछ आर्यों पर भी लेख दिये हैं। इनसे कुछ नई जानकारी मिली है। इस पुस्तक में महाराजा सर प्रतापसिंह का चार पृष्ठ का जीवन वृत्तान्त भी दिया है। लगभग यही सामग्री कभी अवध रिव्यू में भी छपी थी। इसमें कर्नल प्रतापसिंह की अंग्रेज-भक्ति व शिकार आदि की ही विशेष चर्चा है। जोधपुर में महर्षि के आगमन, आर्यसमाज व परोपकारिणी सभा पर एक भी शब्द नहीं लिखा गया। इससे क्या प्रमाणित होता है? व्यर्थ में कुछ बातें गढ़-गढ़कर उसे आर्य समाज पर थोपा जाता है। लाला लाजपतराय ने कभी एक पुस्तक इसे समर्पित की थी। लाला जी के कई अलभ्य लेखों व पुस्तकों की प्राप्ति से प्रमाणित होता है कि उनकी भी आँखें खुल गईं, फिर आपने भी उसकी चर्चा छोड़ दी। श्रीयुत लक्ष्मीचन्द जी मेरठ ने अवध रिव्यू का छायाचित्र माँगा। मैंने भेज दिया। उन्होंने श्री हरविलास के ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद में इसे दे दिया, परन्तु इसके आधार पर कुछ विशेष लिखा नहीं। दस्तावेज उद्धृत करने का फिर प्रयोजन ही क्या। ऋषि के बलिदान पर समाजों की दो सूचियाँ खोजकर प्रकाशित कर दीं। उनमें जोधपुर में आर्यसमाज होने का कतई उल्लेख नहीं। न ही जोधपुर से लिखे गये ऋषि के पत्रों में कोई ऐसा उल्लेख है। बहुत चतुराई से ऋषि के सामने वहाँ आर्य समाज स्थापना की कहानी गढ़कर प्रचारित कर दी गई। इस इतिहास प्रदूषण के लिये प्रतापसिंह के प्रेमी चाकरों की चतुराई और राजभक्ति पर हम क्या कहें? यह सत्य की निर्मम हत्या नहीं तो क्या है?

उत्तर देना आप भी सीखें:- पं. सत्यपाल जी पथिक ने जालंधर से सिखों द्वारा प्रकाशित दित्तसिंह जी की पुस्तक धर्मवीर जी को उत्तर देने के लिए भेजी। मेरे सामने मॉडल टाउन जालन्धर में वही बात उन्हें समाज के प्रधान ने कही और फिर नंगल टाउनशिप से पत्र आया। सबको बताया गया कि उत्तर पढ़ा करो, आप भी उत्तर देना सीखो। श्री दित्तसिंह ने अपने को वेदान्ती बताया है। वह सिख नहीं था। उसकी पुस्तक में सिखों के ग्रन्थ का कोई शब्द नहीं और न ही गुरुओं का नाम है। यह सुनकर सब चौंक जाते हैं। ''उत्तर दो, उत्तर दो'' यह रट लगाने से क्या लाभ?

प्रयाग से पूज्य उपाध्याय जी के विद्वान् शिष्य ने राधास्वामियों की एक चर्चित पुस्तक की फोन पर बात चलाई कि वे कहते हैं कि ऋषि ने हमारे गुरु से मन्त्र लिया। मैंने अपने गुरु भाई श्रीयुत श्याम किशोर जी से कहा कि आप सब इनकी एक ही पुस्तक (वह भी नई छपी) की चर्चा करते हैं, मैंने इनके तीन गुरुओं की तीन पुस्तकों को पढ़ा है। एक ने ऋषि का जीवन लिखा है, एक ने ऋषि के विचारों का खण्डन किया है। एक की पुस्तक में ऋषि जी को विष देने की चर्चा की है। किसी ने भी मत के संस्थापक द्वारा मन्त्र देने की कतई चर्चा नहीं की। चेलों की गढ़न्त का और उत्तर क्या दें? ऋषि ने इस मत का जालंधर में खण्डन भी किया और वह भी बाबा शिवदयाल का नाम लेकर। आर्य लोग न जानें तो मैं क्या करूँ? ऋषि ने खण्डन नहीं किया, यह बात भी अपने आप कट गई।

श्रद्धेय लक्ष्मण जी की 'निष्कलंक दयानन्द' कई पुस्तकों का और कई मतों का उत्तर है। मैंने अनुवाद कर दिया। श्रीयुत जितेन्द्र जी गुप्त ने छपवा दिया। सैकड़ों प्रतियाँ अब तक पड़ी हैं। उत्तर दो का शोर मचाने वाले न पढ़ें, न प्रसार करें और न उत्तर देना सीखें। भारत सरकार की एक पुस्तक में ऋषि की निंदा छपी है। परोपकारिणी सभा ने 'इतिहास की साक्षी' नाम से इसका सप्रमाण मुँह तोड़ उत्तर छापा है। सिलाई मशीन सैन्टर खोलने वाले समाजों को ऐसे साहित्य के प्रचार की क्या चिन्ता? कोई उत्तर देना सीखेगा तो सिखा भी देंगे।

दो आगामी परियोजनायें:- देश-विदेश से महर्षि दयानन्द विषयक प्राप्त नये दस्तावेजों पर कार्य कुछ मास में पूरा हो जायेगा। कुछ नये दस्तावेजों की खोज व प्राप्ति में हमारे आर्यवीर लगे थे सो बीच में कार्य रोकना पड़ा। इस पठनीय पुस्तक के पश्चात् सभा मन्त्री जी व कई माननीय

आर्यों ने बाइबिल पर भी वैसी पुस्तक लिखने का आदेश दिया है। जैसी 'कुरान सत्यार्थप्रकाश के आलोक में' लेखक दे चुका है। बाइबिल पर आवश्यक वाञ्छित सब साहित्य हम एकत्र कर चुके हैं। पूरी तैयारी कर ली गई है। देश भर के प्रमुख विद्वान् सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास पर पादरी जे.एल. ठाकुरदास के ग्रन्थ (ऐसा पहला ग्रन्थ था) की मुझसे माँग करते रहते थे। सबको बताता रहा हूँ कि यह ग्रन्थ तो पूज्य स्वामी वेदानन्द जी को भेंट कर दिया था। अब प्राप्य नहीं है। हर्ष का विषय है कि पूज्य पं. शान्तिप्रकाश जी के भण्डार से यह ग्रन्थ मिल गया है। कुछ मास में इस कार्य में जुट जाऊँगा।

'कुरान वेद की छाया में' लोकप्रिय पुस्तक का तेलगू भाषा में अनुवाद आरम्भ हो चुका है। इस पुस्तक का बड़ा भाग तो पं. चमूपति जी की लौह लेखनी से है। कुछ अध्याय इस सेवक ने लिखे हैं। अब तेलगू अनुवाद के साथ भी एक नया सम्पादकीय होगा। इसमें और नई जानकारी दी जायेगी।

वैदिक इस्लामः- इसके पश्चात् 'वैदिक इस्लाम' एक और रोचक, मौलिक व नई पुस्तक धार्मिक जगत् को भेंट की जायेगी। दिलों को जोड़ना व भ्रम भञ्जन करना इसका प्रयोजन है।

कुछ नया साहित्यः- पं. चमूपति जी ने लिखा है, ''संसार विचारों की लहरों पर नाचता है।'' लेखनी व वाणी दो ही तो विचारों के प्रसार के साधन हैं। इस घड़ी आर्यों के तीन पठनीय खोजपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशनाधीन हैं। श्री डॉ. रामप्रकाश जी द्वारा सम्पादित एक ठोस विचारोत्तेजक अंग्रेजी ग्रन्थ प्रेस में है। इस विशाल ग्रन्थ में लेखकों का श्रम तो प्रशंसा योग्य है ही, श्री डॉ. रामप्रकाश जी ने वेदोद्धार व समाज-सुधार के क्षेत्र में आर्यसमाज की सेवाओं पर अथक परिश्रम किया है। धड़कते दिलों से आर्यजन इसकी प्रतीक्षा करें।

दीवान हरबिलास लिखित ऋषि के अंग्रेजी जीवन-चरित्र की अपनी ही विशेषतायें हैं। परोपकारिणी सभा ने इसके मुद्रण के लिये शोधन का कार्य श्रीमती ज्योत्स्ना जी आर्या, श्रीमान् सत्येन्द्रसिंह जी आर्य तथा इस सेवक को सौंपा। कार्य सम्पन्न होने पर सभा प्रधान जी ने इसे पुनः एक बार देखने को कहा। हम तीनों ने पुनः इसके मुद्रण दोष आदि दूर करने के लिए समय दिया। जो भूलचूक कहीं लगी उसका सुधार कर दिया गया है। अनावश्यक छेड़-छाड़ ग्रन्थ से करना उचित न जाना। ऋषि भक्त इसके स्वागत व प्रसार के लिये तैयार रहें।

'रक्तसाक्षी पं. लेखराम':- मिर्जाइयों के नये प्रहार का उत्तर देने की पुकार सुनकर पं. लेखराम जी व मिर्जाइयत पर आर्यों का अब तक सबसे बड़ा व अत्यन्त खोजपूर्ण यह ग्रन्थ प्रकाशनाधीन है। छः सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ में अनेक अलभ्य स्रोतों के प्रमाण हैं। भविष्य में यह ग्रन्थ आर्यों को शस्त्रागार का काम देगा। इस विषय के इतने प्रमाण व इतनी जानकारी सम्भवतः किसी भी ग्रन्थ में न मिले। यह कठिन कार्य आर्य युवकों की प्रबल प्रेरणा का फल है। पं. लेखराम जी के बलिदान सम्बन्धी प्रत्येक आक्षेप व प्रत्येक प्रश्न का इसमें सप्रमाण उपयुक्त उत्तर मिलेगा।

दो प्रेमी पाठकों की शंकायें:- महाराष्ट्र के एक ज्ञानी विद्वान् ने यह सुझाया है कि तड़प-झड़प में पातूर को अकोला के निकट लिखना चाहिये था न कि नागपुर से। पातूर को अकोला के पास भी कभी लिखा गया। नागपुर विदर्भ का बड़ा व प्रसिद्ध नगर होने से पातूर के निकट लिखना कोई भूल नहीं। लेखक नागपुर व अकोला दोनों को जानता है। दूरस्थ देशवासियों को ऐसे भी परिचय दिया जाता है यथा मुम्बई शोलापुर या पूना गुलबर्गा।

दिल्ली से एक सुयोग्य सज्जन श्री चन्द्रकिशोर झा ने 'नवयुग की आहट' ऋषि जीवन पढ़कर कुछ शंकायें या प्रश्न भेजें हैं। आपने बड़े ध्यान से पुस्तक को पढ़ा। आपका आभारी हूँ। आपके सुझाव ठीक हैं। आपकी शंकाओं का आगे कभी समाधान अवश्य किया जायेगा। प्रतीक्षा करें।

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com **-संयोजक**

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

श्री दुलीचन्द जी जैलदार-
शुद्धि सेना के अवैतनिक सिपाही

-धर्मेन्द्र जिज्ञासु

समग्र क्रान्ति के सूत्रधार आर्यसमाज के आन्दोलन ने समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को अपनी तरफ आकृष्ट किया। श्री दुलीचन्द जी जैलदार भी उन लाखों व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने अपना जीवन आर्यसमाज के आन्दोलन को भेंट कर दिया था। उनका जन्म सन् १८८९ ई. में ग्राम सुनपेड़ तहसील बल्लभगढ, हरियाणा में हुआ। पिता जी का नाम ठाकुर देवीराम था। उनकी माता गाँव-महेपा जिला बुलन्दशहर, उत्तरप्रदेश की थीं।

युवावस्था में आर्यसमाज के समाज सुधार कार्यक्रमों से आकृष्ट होकर वे निष्ठावान् आर्यसमाजी बने। उनका विवाह गाँव-रैनीजा, जिला बुलन्दशहर (उ.प्र.) की भगवानी देवी से हुआ। दो पुत्र हुए-सतपाल सिंह व राजपाल सिंह। गाँव में प्रति वर्ष आर्यसमाज के तीन-चार प्रचार कार्यक्रम करवाते थे। जैलदार जी ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गौरक्षा आन्दोलन में सक्रिय योगदान दिया था। अपने बड़े बेटे सतपाल सिंह को अन्दोलनों में जेल भेजा जिसके कारण सब लोग उन्हें महाशय सतपाल कहने लगे थे। पलवल के निकट गुरुकुल गदपुरी की स्थापना में उनका विशेष योगदान था। वे हर वर्ष गुरुकुल के लिए अन्न संग्रह करके भिजवाते थे। यह परम्परा उनके परिवार में आज तक बनी हुई है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सानिध्य में:- जैलदार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सान्निध्य में शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। बल्लभगढ़, पलवल, मेवात व आगरा में लाखों राजपूत, जाट, मेव आदि की शुद्धि में बढ़-चढ़कर भाग लिया। उनके छोटे सुपुत्र राजपाल सिंह जी ने ७ फरवरी २००६ को 'आर्यसमाज के भीष्म पितामह' श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी को यह जानकारी दी।

''मेरे पिता श्री दुलीचन्द जैलदार जी ने ही इलाके में आर्यसमाज का बीज बोया था। मेरा जन्म सन् १९२३ में हुआ था। मेरा नामकरण संस्कार पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही करवाया था। मेरी जीभ पर सोने की अंगूठी से 'ओ३म्' लिखवाया था। उस समय हमारी हवेली के आंगन के बीच में पत्थर का हवनकुण्ड स्थापित किया गया था, जो आज तक मौजूद है।

पिता जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ शुद्धि का बहुत काम किया था। जल्हाका, बुड़ैना, हरसोला तथा जाटों के अनेक गाँवों की शुद्धि करवाई थी।''

स्वामी स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय, हीरा मार्केट, गुरु बाजार अमृतसर:- जुलाई २०१० ई. में पदोन्नति के कारण मेरी पोस्टिंग अमृतसर में हुई। वहाँ मैं दिसम्बर २०१२ तक रहा। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय में पुरानी पुस्तकों व समाचार-पत्रों की फाइल उलटते-पुलटते मुझे जैलदार जी के बारे में दो समाचार मिले, जो इस प्रकार हैं:-

१. शुद्धि समाचार का सभा-विवरणांक-१५ मई सन् १९३० ई., वर्ष ६ संख्या ५, पृष्ठ २१७

अवैतनिक प्रचारक

वैतनिक प्रचारकों के अतिरिक्त बहुत से उपदेशक महानुभावों तथा सहायकों ने इस वर्ष सभा के प्रचार कार्य में समय-समय पर अच्छी सहायता दी है और उन्होंने सभा से किसी प्रकार का भी खर्चा यहाँ तक कि मार्ग व्यय भी प्राप्त नहीं किया है।

अवैतनिक प्रचारक महानुभावों के कुछ नाम इस प्रकार हैं:-

क्रम सं. १२ श्री चौ. दुलीचन्द जी सुनपेड़।

क्रम सं. ११ पर श्री चौ. चन्दन सिंह जी पलवल (क्रम सं. ४ पर) इस सूची में श्री पं. धुरेन्द्र शास्त्री न्यायभूषण, पटना व कुँवर चाँदकरण जी शारदा, अजमेर (क्रम सं. ३० पर) दिए गए हैं।

२. शुद्धि समाचार-१५जून १९३० ई. (वर्ष ६ सं. ६) पृष्ठ २६६ विविध समाचार-

''ता. १५ मार्च सन् १९३० ई. शनिवार को ग्राम दीघोट जिला गुडगाँवा निवासी चौ. तारासिंह नम्बरदार की २ पुत्रियों का विवाह संस्कार ग्राम अटारी तह. बल्लभगढ़ के चौ.

समयसिंह के २ पुत्रों से हुआ। विवाह में श्री चौधरी दुलीचन्द सुनपेड़ निवासी, श्री चौ. कर्णसिंह जी कौरारी निवासी शामिल हुए। चौ. तारासिंह नम्बरदार की शुद्धि सन् १९२४ ई. में 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' द्वारा की गई थी।''

जैलदार:- पंजाब राज्य जिलावार गजेटियर वॉल्यूम २ ए के पृष्ठ २०७-०८ के अनुसार:-''प्रत्येक तहसील अनेक सर्कल या जैलों में विभाजित होती है, जिनका प्रभारी जैलदार होता है। जैलदार कोई सरकारी अधिकारी नहीं होता, बल्कि वह प्राय: किसी जैल में सम्मिलित किसी गांव का मुखिया या लम्बरदार होता है। उसकी नियुक्ति लम्बरदारों के समूह में से चयन द्वारा होती है। चयन इन आधारों पर किया जाता है'':-

१. जैल में उस व्यक्ति का प्रभाव/रुतबा

२. उसका चरित्र

३. उसके स्वामित्व वाली जायदाद/जमीन का रकबा/क्षेत्र

४. राज्य/सरकार के प्रति उसके द्वारा की गई सेवायें।

एक जैल में कई गाँव भी सम्मिलित हो सकते हैं। पारितोषिक/प्रतिफल के तौर पर जैलदार को किसी गाँव के राजस्व का एक निश्चित अंश दिया जाता है।

ठाकुर श्री दुलीचन्द की सामाजिक सक्रियता के कारण ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें सन् १९३२ ई. में जैलदार नियुक्त किया। सरकार उन्हें आर्यसमाज के कार्यों से उदासीन करना चाहती थी, परन्तु वे सन् १९६५ ई. तक अत्यन्त उत्साहपूर्वक आर्यसमाज का काम करते रहे। उन्होंने अपनी सन्तान को भूत-प्रेत से न डरने, मूर्तिपूजा न करने आदि के संस्कार दिए। गाँव में शाहपुर मोड़ पर आर्यसमाज का मन्दिर बनवाया।

शुद्धि चक्र और देश का बँटवारा:- सन् १९४६ ई. में शुद्धि सभा द्वारा मेवात के अनेक गाँवों की शुद्धि की गई। इधर गुडगाँवा जिला में जटौला, फतेहपुर बिल्लौच, नौगाँव, तेरहा, गिर्राज जी की परिक्रमा वाले गाँव-जतीपुरा, कनोट, बरसाना के पास देवदिया आदि में शुद्धि चक्र चला जिसमें जैलदार जी ने सक्रिय भूमिका निभाई। सन् १९४७ ई. में बँटवारे के समय जो मुसलमान यहाँ से पाकिस्तान जाना चाहते थे, जैलदार जी ने उनको सुरक्षित निकलने में मदद की। उन लोगों ने पाकिस्तान से एहसानमन्दी के पत्र भेजे थे।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी व नेहरु जी के संग:- जैलदार जी का सामाजिक रुतबा बहुत बढ़ गया था। श्री प्रकाशवीर शास्त्री जी ने बल्लभगढ़ से चुनाव लड़ा व जीता। इस चुनाव में जैलदार जी ने विशेष भूमिका निभाई थी। शास्त्री जी का चुनाव चिन्ह 'शेर' था। वे जैलदार जी को पिता जी कहते थे। आर्यसमाज के उस समय के प्रमुख विद्वानों व संन्यासियों से उनका परिचय था। श्री रामगोपाल शाल वाले उनका बहुत आदर करते थे। भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं. नेहरु जी के साथ उनका एक फोटो था, जो अब उपलब्ध नहीं है। वे सन् १९५८-६० ई. में गुरुकुल काँगड़ी के उत्सव पर गए थे। आर्य समाज के बोम्बे अधिवेशन में भी भाग लिया था।

आर्यसमाज बनाम ईसाई मिशनरी केस में गवाही

पलवल निवासी तथा भुसावर राजस्थान में कन्या गुरुकुल के संस्थापक 'संगठन पुरुष' श्री हरीशचन्द्र शास्त्री जी के अनुसार पलवल क्षेत्र में ईसाई मिशनरी प्रचार व धर्म परिवर्तन करते थे। आर्यसमाजियों द्वारा विरोध करने पर उन्होंने केस दायर कर दिया। तब लाहौर कोर्ट में आर्यसमाजियों के पक्ष में गवाही देने श्री दुलीचन्द जैलदार जी भी गए थे। अजमेर में ऋषि मेला के अवसर पर डॉ. वेदपाल जी ने बताया था कि जैलदार जी का इलाके में बहुत प्रभाव था। एक बार 'प्रकाश मिल' वालों के किसी ने पैसे उधार लेकर वापस करने से मना कर दिया। जब जैलदार जी ने ही उनकी मदद की थी।

वानप्रस्थ व संन्यास

जैलदार जी ने गुरुकुल गदपुरी में वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। पहले दाढ़ी रखते थे, वानप्रस्थी बनने पर दाढ़ी कटवा दी। फिर सन् १९६२ ई. में संन्यास ले लिया तथा गुरुकुल गदपुरी में ही रहने लगे। संन्यास आश्रम में प्रवेश करते समय उनका नाम 'सत्यानन्द सरस्वती' रखा गया था।

मृत्यु का पूर्वाभास

उन्हें मृत्यु का पूर्वाभास हो गया था। अपने पौत्र नरजीत से उनका विशेष स्नेह था। आर्य समाज के संस्कार उसे

घुट्टी में पिलाए थे। सन् १९६९ ई. में मृत्यु से एक सप्ताह पहले गुरुकुल गदपुरी से गाँव आ गए थे। उन्होंने अपने पौत्र नरजीत को बता दिया था कि ७ मार्च को सांयकाल मैं शरीर त्यागूंगा। उन्होंने बाजार से २१ किलो हवन सामग्री, ११ किलो देशी घी, १ किलो चन्दन लकड़ी मंगवाई। रु. २१००/- गुरुकुल गदपुरी को दान भिजवाया। ६ मार्च को शाम को अपने पौत्र नरजीत को गुरुकुल गदपुरी भेजकर वहाँ से शास्त्री जी को बुलवाया। ७ मार्च सन् १९६९ ई. को सांयकाल में वे चल बसे।

इलाके में आर्यसमाज का पतन व पुनरुद्धार

उनके मरने के पश्चात् इलाके में आर्यसमाज का काम निष्क्रिय होता चला गया। आर्यसमाज मन्दिर पर पौराणिकों के भजन कीर्तन होने लगे। उनके बड़े पुत्र सतपाल की मद्य व्यसन के कारण मृत्यु हुई। राजपाल सिंह आजीवन प्रात:काल यज्ञ करते थे। चुनावों के चक्कर में राजनैतिक दाँव-पेंच चलते थे। फलत: आर्यसमाज समाप्त प्राय: हो गया।

सन् १९८० के दशक में आर्यवीर दल की शाखाओं के माध्यम से श्री होतीलाल आर्य व हरवीर आर्य जी ने आर्यसमाज में फिर से जीवन फूँका। सन् १९९७ ई. में गाँव में आर्यवीर महासम्मेलन कराया गया। जिसमें जैलदार जी के परिवार ने भरपूर सहयोग दिया। नवम्बर २००० ई. में गाँव में आर्य समाज की स्थापना कराई। श्री राजपाल जी ने स्टेज पर आकर मेरी पीठ थपथपाई तथा बोले आज तुमने गाँव का नाम फिर से रोशन कर दिया। श्री राजपाल जी का निधन सितम्बर २०१० ई. में हो गया। ७ मार्च २०१३ ई. वीरवार को जैलदार जी के परिवार वालों ने श्रद्धा-दिवस मनाकर एक नयी शुरुआत करने का प्रयास किया है और अब-''लहलहाती है खेती दयानन्द की''

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

ऋषि मेला २०१६ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला ४,५,६ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१६ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉलें लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उस क्रम से स्टॉलों का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉलों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधा:- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाईट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य: - **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टेन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉलों में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाईयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३३ वाँ ऋषि बलिदान समारोह

दिनांक ४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

महापुरुषों का यज्ञमय जीवन हमको प्रत्येक कदम पर प्रेरणा व मार्ग दर्शन देता रहता है। जिस कारण हम उनके ऋणी हो जाते हैं। इस ऋण से मुक्त होने का एक ही उपाय है- महापुरुषों की विचारधारा का यथासामर्थ्य प्रचार-प्रसार। विराट व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३३ वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ- ३१ अक्टूबर से 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ किया जायेगा, इस यज्ञ की पूर्णाहूति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ६ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यानन्द वेद वागीश होंगे। यह यज्ञ ऋषि-उद्यान, अजमेर की यज्ञशाला में होगा।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १५ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। ४, ५, ६ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। ४ नवम्बर को परीक्षा एवं ५ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १५ अक्टूबर, २०१६ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हलकी ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें।

सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तद्नुसार व्यवस्था की जा सके।

सभी से निवेदन है कि १३३ वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकत्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान्- प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी-अबोहर, आचार्य विजयपालजी-झज्जर, स्वामी ऋतस्पति जी, डॉ. ब्रह्ममुनि जी-महाराष्ट्र, डॉ. सुरेन्द्र कुमारजी- कुलपति गुरुकुल कांगडी विश्विद्यालय हरिद्वार, डॉ. वेदपाल जी-बडौत, आचार्या सूर्या देवी जी- शिवगंज, डॉ. राजेन्द्रजी विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाश जी, सत्येन्द्रसिंह जी- मेरठ, डॉ. कृष्णपाल सिंह जी- जयपुर, श्री सत्यानन्द आर्य- दिल्ली, श्री राजवीर जी-मुरादाबाद, श्री जगदीश जी शर्मा- जयपुर, श्री शिवकुमार जी चौधरी -इन्दौर, श्री जयदेव जी आर्य-राजकोट, श्री प्रकाश जी आर्य-महू, श्री कन्हैयालाल जी-गुड़गाँव, डॉ. रामचन्द्र जी- कुरुक्षेत्र, श्री तपेन्द्र कुमार जी-जयपुर, डॉ. जगदेव जी-रोहतक, श्री विरजानन्द जी दैवकरणि-झज्जर, डॉ. सत्यपालसिंह जी-संसद सदस्य, डॉ. मुमुक्षु जी-नोएडा, ठाकुर विक्रमसिंह जी-दिल्ली, श्री अशोक जी आर्य-नोएडा, श्री रामपाल जी शास्त्री-मन्त्री हरियाणा प्रतिनिधि सभा, श्री सत्यवीर जी शास्त्री-रोहतक, श्री शत्रुञ्जय जी रावत- हैदराबाद, माता अमृत जी-श्री रामपाल जी-हरि., दिल्ली, श्री बाबूराम महात्रे-हैदराबाद, श्री सुदर्शन जी-ओडिशा, स्वामी शारदानन्द जी- आबूरोड, डॉ. राजवीर-फरीदाबाद, श्री सत्यपाल जी पथिक, प. भूपेन्द्र सिंह जी आदि

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

गजानन्द आर्य	धर्मवीर	ओम मुनि
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री

आत्मा का स्थान-२

- स्वामी आत्मानन्द

आत्मा का परिमाण :-आत्मा का निवास स्थान सारा शरीर मान लेने पर और आत्मा को मध्यम परिमाण वाला मान लेने पर कई प्रश्न ऐसे सामने आ जाते हैं जिनका उत्तर देने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

१- शरीरों के परिमाण भिन्न-भिन्न हैं। चींटी से लेकर हाथी तक और हाथी से भी बहुत बड़े सामुद्रिक जन्तु संसार में विद्यमान् हैं। आत्माओं को भी अपने अपने कर्मभोग के अनुसार भिन्न-भिन्न शरीरों में जाना ही पड़ता है। जब वह चींटी जैसे किसी छोटे शरीर में था तब उसका आत्मा अपने शरीर के परिमाण वाला चींटी जितना ही बड़ा होगा। और जब वह किसी छोटे शरीर को छोड़ कर हाथी जैसे बड़े शरीर में जावेगा तो उस आत्मा को भी वहाँ हाथी जितने बड़े परिमाण वाला ही मानना पड़ेगा। आत्मा बड़े से छोटा और छोटे से बड़ा घटे बढ़े बिना हो नहीं सकता, और घटना बढ़ना अनित्यपदार्थ का काम है। परन्तु आत्मा को तथा पुनर्जन्म को मानने वाले दार्शनिक कोई भी आत्मा को अनित्य मानते नहीं। अत: आत्मा यदि शरीर के परिमाण वाला है, तो बढ़ने और घटने वाला होने के कारण अनित्य क्यों नहीं। यह प्रश्न सामने उपस्थित होता है जिसका कि समाधान कठिन है।

संसार में तीन प्रकार के परिमाण देखने में आते हैं, अणु मध्यम और परम महत् । अणु परिमाण उस पदार्थ का माना जाता है जो टूटते-टूटते इतना सूक्ष्म हो गया है जिसके अब टुकड़े नहीं हो सकते। दार्शनिक परिभाषा में उसे परमाणु कहते हैं। इस परमाणु का परिमाण अणु है और नित्य है। क्योंकि जिस पदार्थ के अवयवों का हम विभाग करने लगेंगे, वह छोटा होता-होता इसी परमाणु की अवस्था में पहुँचेगा, यह इससे छोटा न हो सकेगा, अब उसके वे सब टुकड़े भी परमाणु कहलाएंगे, और उन सब का परिमाण अणु ही होगा। परमाणु से छोटा दुनिया में कोई टुकड़ा न मिलेगा और इसीलिये अणु से छोटा कोई परिमाण न मिलेगा। यह ही कारण है कि इस परिमाण को नित्य मानना पड़ता है, क्योंकि न इसके आधार के टुकड़े होंगे, और न इसका नाश होगा।

दूसरा परिमाण परम महत् परिमाण है। परम महत् परिमाण उन पदार्थों का माना जाता है जो व्यापक हों और नित्य हों, जिनकी न उत्पत्ति होती हो और न विनाश। ऐसे पदार्थ हैं, ईश्वर आकाश आदि।

तीसरा मध्यम परिमाण है। इन परमाणुओं और व्यापक पदार्थों को छोड़ कर शेष जितने पदार्थ हैं वे सब अनित्य हैं उनकी उत्पत्ति भी होती है और विनाश भी, और उन सबका परिमाण मध्यम परिमाण माना जाता है। इस परिमाण के आश्रय जितने पदार्थ हैं उन सबके अनित्य होने से उनका परिमाण मध्यम परिमाण भी अनित्य है। अब यह प्रश्न सामने आता है कि आत्मा का परिमाण यदि मध्यम परिमाण है तो वह विनाशी ही होगा, फिर आत्मा को नित्य कैसे सिद्ध करोगे? यह प्रश्न भी ऐसा ही है जिसका उत्तर देना कठिन होगा।

आत्मा को सारे शरीर में व्यापक मानने के लिये और उसे विनाश से बचाने के लिये उसका परिमाण परम महत् परिमाण माना जा सकता है। परन्तु उसका यह परिमाण मान लेने पर उसे ईश्वर की भाँति ही सर्वव्यापक मानना पड़ जावेगा और इस प्रकार उसके अनन्त हो जाने पर उसका ज्ञान भी अनन्त होगा, अत: अब तो उसे सर्वज्ञ ही मानना पड़ जावेगा अल्पज्ञ नहीं। परन्तु व्यवहार में ऐसा देखने में नहीं आता।

यदि यह समाधान करें कि आत्मा है तो व्यापक ही और अतएव है भी सर्वज्ञ, परन्तु अविद्या आदि किसी उपाधि के कारण वह अल्पज्ञ प्रतीत होने लगता है, और उसी प्रकार का व्यवहार करने लग जाता है। तो यह समाधान युक्ति-युक्ति न होगा।

इस सिद्धान्त पर विचार करने के लिये निम्न विकल्प खड़े हो जाते हैं-जिस उपाधि ने आत्मा को अल्पज्ञ बना दिया है वह आत्मा का अपना ही अंग है या उससे भिन्न। आत्मा का अंग तो उसे कहा नहीं जा सकता-क्योंकि आत्मा निरवयव पदार्थ है अत: निरवयव का कोई अंग या

अवयव नहीं हो सकता। यदि कहें कि यहाँ अंग का अर्थ स्वरूप है। तब तो अविद्या आत्म स्वरूप ही हुई। और यदि वह आत्म स्वरूप ही है तो इसके गुण कर्म स्वभाव आत्मा से भिन्न होने चाहिये। यदि आत्मा का गुण ज्ञान है तो इसका भी गुण ज्ञान ही होना चाहिये, और ज्ञानवान् यह पदार्थ अब आत्मा को अज्ञानी न बना सकेगा। यदि कहें कि इस का धर्म अज्ञान है तब फिर आत्मा का भी धर्म अज्ञान ही होगा, और इसका स्वभाव अज्ञान होने से इसे अब कोई ज्ञान न बना सकेगा। यदि कहें कि अविद्या ने इसे अज्ञानी बना दिया था और अविद्या के हट जाने से यह ज्ञानी ही रह जावेगा यह सङ्गत नहीं, क्योंकि अविद्या जब आत्मा का स्वरूप ही है तो वह उससे दूर हो ही न सकेगी, किसी के स्वरूप को कोई उससे पृथक् नहीं कर सकता। अत: आत्मा सदा अज्ञानी ही बना रहेगा। यदि कहें कि अविद्या आत्म स्वरूप नहीं आत्मा से भिन्न ही तत्त्व है, और आत्मा पर छा जाने से वह उसे अज्ञानी बना देती है। इस अवस्था में हम यह जानना चाहेंगे कि अविद्या आत्मा के किसी एक भाग को आच्छादित करती है या सम्पूर्ण को। यदि एक भाग को तो आत्मा का कोई भाग ज्ञानी और कोई भाग अज्ञानी है ऐसा मानना पड़ेगा। परन्तु नित्य निरवयव एक आत्मा में ऐसा होना असम्भव है । वह तो एक अखण्ड हाने से या तो सारा ज्ञानी ही रहेगा या अज्ञानी ही। और यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि सहस्रों मेघों से आच्छादित कर देने पर भी सूर्य के प्रकाश को हम से तो छिपाया जा सकता है परन्तु सूर्य से सूर्य के प्रकाश को कोई नहीं छिपा सकता। इसी प्रकार अविद्या से आच्छादित कर आत्मा के ज्ञान को किसी और से तो कोई छिपा सकता है आत्मा से उसके ज्ञान को कोई नहीं छिपा सकता। हरे शीशे से ढकी हुई सूर्य की किरणें हमें तो हरी दिखाई देने लग जाती हैं परन्तु यदि सूर्य चेतन हो तो उसे अपनी किरणें वैसी ही दिखाई देंगी जैसी कि वे हैं। क्योंकि आवरण सूर्य के बाहर है अन्दर नहीं। इसी प्रकार आत्मा भी अपने आपको अज्ञानी मान न सकेगा क्योंकि अविद्या का पर्दा उस के बाहर है अन्दर नहीं। अत: अल्पज्ञ होने के कारण आत्मा को व्यापक नहीं माना जा सकता।

अब शेष रह जाता है अणु परिमाण अत: अब विवश आत्मा का यह ही परिमाण मानना पड़ेगा।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि यदि आत्मा का परिमाण अणु है तो वह शरीर के एक भाग में ही रहेगा। और यदि ऐसा है तो चैतन्य से होने वाली अनेक क्रियाऐं शरीर के सब भागों में किस प्रकार सम्पन्न हो रही है?

इस प्रश्न के उत्तर में निवेदन है कि जिस प्रकार राजा साम्राज्य के एक भाग राजधानी में ही बैठा रहता है परन्तु सारे साम्राज्य के सब विभागों के कार्य उसकी प्रेरणा मात्र से उसके अधिकारीवर्ग के द्वारा सम्पन्न होते रहते हैं। ठीक इसी प्रकार आत्मा एक भाग में ही बैठा हुआ अपनी प्रेरणा मात्र से मन, इन्द्रिय, ज्ञान तन्तु और प्राणतन्तुओं आदि साधनों द्वारा सारे शीरर में होने वाली क्रियाओं को सम्पादित करता रहता है।

अत: आत्मा के शरीर के किसी एक देश में रहने पर भी कोई चेतन जन्य कार्य रुक नहीं सकता। अत: वह अणु है और नित्य है। युक्ति सिद्ध इस विषय का उपपादन उपनिषद् भी करते हैं-

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो यस्मिन् प्राण: पञ्चधा संविवावेश।
प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन् विशुद्धे विभवत्येष आत्मा।।

मुण्डक ३/१/९

यह अणु आत्मा मन से ही जानना चाहिये। पाँचों प्राणों का निवास इसी के पास है। प्राण एक सर्वत्र विद्यमान् तत्त्व है जिसका सारी प्रजाओं के चित्त के साथ सम्बन्ध है। चित्त के विशुद्ध हो जाने पर आत्मा ईश्वरीय वैभव से अपने आपको सम्पन्न कर लेता है।

उपनिषद् के इस प्रसङ्ग में आत्मा का स्पष्ट ही अणु परिमाण माना है।

आत्मा का परिमाण अणु सिद्ध हो जाने पर स्वभावत: यह जिज्ञासा होती है कि हमारे शरीर में आत्मा का निवास कहाँ होना चाहिये। उपनिषद्कार महर्षि आत्मा का निवास स्थान हृदय में मानते हैं।

क्रमश.....

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

परमपिता ही मेरे रक्षक हैं

एक तेलगु में प्रकाशित पुस्तक का अंश इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। पुस्तक एक तटस्थ प्रसिद्ध पत्रकार द्वारा लिखी गई है। पाठक पुस्तक पढ़कर भारत की स्वतन्त्रता को किसने कैसे बाधित किया। इस बात का भलीभाँति समझ सकेंगे।

लेखक की स्पष्ट मान्यता है, कि देश की स्वतन्त्रता के संघर्ष जो दिशा स्वामी श्रद्धानन्द की भी वही सर्वथा उचित और देशहित में थी, किन्तु महात्मा कहाने वाले व्यक्ति स्वामी श्रद्धानन्द की भी वही सर्वथा उचित और देशहित में थी, किन्तु महात्मा कहाने वाले व्यक्ति ने स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों और विचारों का विरोध ही नहीं किया अपतु मुस्लिम तुष्टिकरण और अंग्रेजी शासन को निष्कण्टक बनाने में सहायता भी प्रदान की। यह बात इस पुस्तक में सप्रमाण पढ़ सकेंगे।

-सम्पादक

''इस समय जब यों भी हिन्दू-मुसलमानों के सम्बन्ध बहुत चिंताजनक हो गए हैं, 'शुद्धि' आन्दोलन न लाते तो मुझे प्रसन्नता होती।'' पंडित मोतीलाल नेहरु ने कहा।

'''शुद्धि' के कार्यकर्त्ता भोले लोगों को दिक करके जबर्दस्ती उनका धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं, यह कहकर मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपना क्रोध व्यक्त किया।''

''इस समस्या को अब न छेड़ते तो अच्छा था। कम-से-कम अब बाहर के लोग निकल जाएँ और मलकानों को अपना निर्णय खुद लेने दें, तो ठीक रहेगा।'' यह कहकर पं. जवाहरलाल नेहरु ने समाचार पत्र 'लीडर' के १३ मई वाले अंक में अपना उदात्त उद्‌बोधन दिया।

हिन्दुओं का धर्मप्रेम सभ्य लोगों का लक्षण नहीं है, यह मानकर अरुचि व्यक्त करने वाले नेहरु जैसे सेक्यूलर महापुरुषों की बात दूसरी है। ''मेरी नस-नस में हिन्दू चेतना भरी हुई है, हिन्दू धर्म और गीता के प्रबोधन को मुझसे ज्यादा किसी ने नहीं समझा है,'' यह बात कई बार कह चुके महात्मा को क्या हो गया था? 'औसत हिन्दू भीरु हैं और औसत मुसलमान धौंसिया (Bully)। जब तक भीरु लोग होंगे, तब तक धौंसिया लोग धाक जमाते रहेंगे' यह सूत्र देने वाले इन महानुभाव ने औसत हिन्दू के अपनी भीरुता त्यागकर कार्यक्षेत्र में उतरने को किस रूप में देखा था? उस अपूर्वक परिणति को लेकर कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी?

हिन्दुओं की भीरुता को दूर करके उनको कार्योन्मुख करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द पर, उनको स्फूर्ति देने वाले ऋषि स्वामी दयानन्द पर, उस स्वामी द्वारा स्थापित आर्यसमाज पर, उसके पवित्र ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर महात्मा जी खोलकर टूट पड़े थे। 'यंग इंडिया' के २९-०५-१९२४ वाले लगभग पूरे अंक को उन्होंने अपने इस आक्रमण पर ही खर्च कर दिया था। Hindu-Muslim tension: Its Cause and Cure नामक शीर्षक से उस पूरे अंक में फैले अपने लम्बे लेख में उनकी लेखनी से निसृत इन अमृत वाक्यों पर ध्यान दें:

Swami Shraddhanandji's speeches are often irriatating. He has faith in himself and his mission. But he is hasty and easily ruffled. He inherits the traditions of the Arya Samaj. I have profound respect for Dayanand Saraswati....But he made his Hinduism narrow. I have read Satyarth Prakash, the Arya Samaj Bible.... I have not read a more disappointing book... He has misrepresented Jainism, Islam, Christianity and Hinduism itself. One having even a cursory acquaintance with these faiths could easily discover the errors.

स्वामी श्रद्धानन्द के भाषण अकसर चिढ़ पैदा करने वाले होते हैं। उन्हें खुद पर तथा अपने काम में सच्चा विश्वास है। पर उनमें उतावलापन है और वे आसानी से चिढ़ भी जाते हैं। आर्यसमाज की परम्परा उन्हें विरासत में मिली है। स्वामी दयानन्द सरस्वती को मैं बड़े आदर की दृष्टि से देखता हूँ, पर उन्होंने अपने हिन्दू धर्म को संकुचित

बना दिया है। आर्य समाज की बाइबिल, 'सत्यार्थ प्रकाश' को मैंने पढ़ा है। किसी अन्य इतने बड़े सुधारक की इतनी निराशाजनक कोई कृति मैंने आज तक नहीं पढ़ी है। उन्होंने जैन धर्म, इस्लाम, ईसाई धर्म और खुद हिन्दू धर्म को भी गलत रूप में पेश किया है। जिन्हें इन महान् धर्मों की थोड़ी भी जानकारी है, वे सहज ही देख सकते हैं कि इसमें कैसी-कैसी भूलें हो गई हैं।

Having the narrow outlook, Arya Samajists either Quarrel with people of other denominations, or failling that, with one another. Shraddhanandji has a fair share of that spirit.

(दृष्टि की संकीर्णता के कारण आर्यसमाजी लोग या तो दूसरे धर्मों के लोगों के साथ लड़ते हैं या वह संभव न होने पर आपस में ही लड़ते-झगड़ते रहते हैं। श्रद्धानन्द में भी यह भावना पर्याप्त मात्रा में है।)

That which is keeping up the tension is the manner in which Shuddhi or Conversion Movement is being conducted. In my opinion there is no such thing as proselytism in Hinduism as it is understood in Chrstianity or to a lesser extent in Islam.The Arya Samaj preacher is never so happy as when he is reviling other religions.

जो बात इस तनाव को कायम रखे हुए है, वह है शुद्धि आन्दोलन का मौजूदा तरीका। धर्मांतरण के लिए जिस अर्थ में ईसाई धर्म में स्थान है और कुछ कम अंशों में इस्लाम में, मेरे विचार से उस अर्थ में हिन्दू धर्म में उसके लिए कोई स्थान नहीं है। आर्य समाजी उपदेशकों को जो मजा दूसरे धर्मों पर कीचड़ उछालने में आता है, वह मजा और किसी बात में नहीं आता।

I am told Atya Samajists and Musalmans virtually kidnap women and try to convert them.

(मुझे बताया गया है कि आर्यसमाजी और मुसलमान दोनों ही महिलाओं का अपहरण करके उनका धर्मांतरण करते हैं।)

मोटे तौर पर यह है उस अवतारी पुरुष का अमूल्य अभिमत? महात्मा जी ने माना कि श्रद्धानन्द के प्रति उनमें जो प्रेम था, उसी ने उनसे यह बातें कहलवायी हैं। किन्तु जिन लोगों ने पढ़ा उन लोगों ने तो ऐसा नहीं समझा। मुख्य रूप से आर्यसमाजियों को और शुद्धि आन्दोलन में भाग ले रहे हजारों हिन्दुओं को गांधी जी की बातों ने बहुत रोष दिलाया। देश भर में विरोध-सभाएँ हुईं। पत्रिका-कार्यालयों में ढेरों विरोध-पत्र पहुँचे। 'आपने बहुत गलत बात कही है' यह जताते हुए गाजियाबाद, मुलतान, दिल्ली, सुक्कूर, कराची, सिकंदराबाद आदि केन्द्रों से अनगिनत तार गांधी जी के पास पहुँचे। उनमें से एक तार का उल्लेख करते हुए 'यंग इंडिया' में महात्मा ने अपना यह उत्तर दिया था-

आगरे से मुझे एक तार मिला है।

आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्दजी, 'सत्यार्थ प्रकाश' और शुद्धि-आन्दोलन के बारे में आपने जो कड़े शब्द कहे हैं। आगरा उनके और आपके प्रति अपना विरोध प्रकट करता है। उसे विश्वास है कि आर्य-समाज के सिद्धान्तों का पूरा परिचय न होने के कारण आपने अनजाने में वे सब बातें कही हैं। वह आपसे सादर प्रार्थना करता है कि आप अपने विचारों पर फिर से गौर करें और उनसे उद्वेग उत्पन्न होने की संभावना है, उसे दूर करें।

१. तात्पर्य गांधी जी के ''हिन्दू-मुस्लिम तनाव: कारण और उपचार'', २९-०५-१९२४ भेजते हैं।

उत्तर में मैं एक ही बात कहना चाहता हूँ। गहराई से जाँच किये बगैर आर्य समाज, दयानन्द और श्रद्धानन्द जी को लेकर मैंने एक शब्द भी नहीं कहा है। मैंने जो भी लिखा, सोच-समझकर ही लिखा।

दुर्निवार वेग में चल रहे हिन्दू आन्दोलन पर महात्मा ने जो रोपण किया, उससे तत्कालीन हिन्दू समाज कितना व्यथित हुआ था, इसके लिए स्वामी श्रद्धानन्द के सुपुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपने पिता की स्मृतियों को संजोकर लिखी 'मेरे पिता' नामक पुस्तक की यह व्याख्या एक अच्छा उदाहरण है:

''यहाँ प्रसंगवश मैं महात्मा जी के हिन्दू-मुस्लिम एकता सम्बन्धी लेख की चर्चा भी कर देना चाहता हूँ, जो 'यंग इंडिया' में प्रकाशित हुआ था। उसमें महात्मा जी ने हिन्दू-मुस्लिम विरोध के कारणों पर जो विचार करते हुए

जिस शैली का अनुसरण किया था, उससे संभव है कि मुस्लिम समाज पर उनकी उदारता का सिक्का जमा हो, परन्तु भारत की राजनीति और सामाजिक दशा पर उसका बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा। उस लेख में महात्मा जी ने कुरान और इस्लाम की खूब प्रशंसा की और सत्यार्थ प्रकाश और उसके मानने वालों के लिए बहुत तिरस्कार सूचक शब्दों का प्रयोग किया। पिता जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) पर तो उस लेख में विशेष कृपा की गई थी, यह मेरा ही नहीं, प्रायः सभी हिन्दू हृदय रखने वाले भारतवासियों का मत था कि महात्मा जी ने उस लेख में स्वामी जी के सम्बन्ध में जो पक्षपातपूर्ण आलोचना की थी, उसने देश के साम्प्रदायिक वातावरण में बहुत ही विषैला धुआँ फैला दिया।

मेरा विचार है कि महात्मा जी ने भी अपना लेख प्रकाशित हो जाने के पश्चात् यह अनुभव किया था कि वे उस लेख में आर्यसमाज और स्वामी जी के साथ अन्याय कर गए हैं। 'यंग इंडिया' में कई सम्पादकीय लेख लिखकर उन्होंने अपने प्रारंभिक लेख के असर को धोने की चेष्टा की, परन्तु जो जहर फैल चुका था, वह दूर न हो सका। उस लेख के दो बुरे परिणाम हुए। एक तो यह कि देश के बिगड़े हुए वातावरण की मुख्य जिम्मेदारी मुख्य रूप से आर्य समाज और स्वामीजी पर डाली गई, यह सत्य के सर्वथा विरुद्ध थी और दूसरा यह कि सांप्रदायिक मुसलमानों को यह विश्वास हो गया कि महात्मा गांधी हम से डरते हैं, हम चाहें कुछ करें, वे हमें अच्छा, दूसरों को बुरा कहेंगे।

बाद के दस वर्षों में भारत की राजनीति में जो अव्यवस्था आ गई, उसका मुख्य कारण वह दूषित मनोवृत्ति थी, जो 'यंग इंडिया' के एकता सम्बन्धी लेख से पैदा हुई।''

ऐसे में महात्मा के आक्रमण का मुख्य लक्ष्य बने स्वामी श्रद्धानन्द ने उस महानुभाव से मिले 'सर्टिफिकेट' को लेकर किस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त की थी?

जब उनसे पूछा गया कि गांधी जी के लेख को लेकर कुछ अपनी प्रतिक्रिया देंगे? तो स्वामी श्रद्धानन्द ने उत्तर दिया-''मैं नहीं समझता कि उसका उत्तर देने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी की बात का खंडन करने के लिए उनकी खुद की बातें काफी हैं। वे अंतर्विरोधों से भरी हुई हैं। आर्यसमाज के प्रति उनमें द्वेष क्यों है, यह बात उस घोषणा से ही समझ में आ जाती है। उनके लिखने से आर्य समाज की कोई क्षति होने वाली नहीं है। महात्मा गांधी हों, या कोई और, चाहे जितनी बारआक्रमण करे, समाज के कार्यकलापों को रोक नहीं सकेगा।''

महात्मा गांधी जैसे ने ही जब शुद्धि आन्दोलन की निन्दा करके उसका केन्द्र बने हुए स्वामी श्रद्धानन्द का, उनके गुरु का अनादर किया, तो मुस्लिम मताग्रही ऐसे जोश में आ गए कि उनको रोकना मुश्किल हो गया। सांप्रदायिक हिंसा कांड में सैंकडों हिन्दुओं की दारुण हत्या और भले घर की स्त्रियों के साथ बलात्कार करके हजारों को जबर्दस्ती मुसलमान बनाने के अमानुषिक कृत्य तो नीचे कहीं दब गए। शताब्दियों तक गले पर छुरी रखकर बलपूर्वक कराए गए धर्मांतरण सज्जन पुरुषों के विचारने योग्य विषय नहीं रहे। असहनीय परिस्थितियों में धर्म बदलकर अपने पूर्व धर्म के प्रति प्रेम के कारण वापस आना चाहने वालों को हिन्दू धर्म में फिर से ले जाना तो सेक्युलर महात्माओं के दृष्टि में अपराध हो गया। सभी अनर्थों का मूल हिन्दुओं का 'शुद्धि आन्दोलन' है, यह कहकर राष्ट्र के नेताओं ने ही जब अपनी पक्षपातपूर्ण आँखों से फैसला दे दिया, तो उस आन्दोलन के आधारस्तम्भ स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति मुसलमान वर्गों में प्रतिशोध की भावना उग्र हो उठी। उनके नगरों में श्रद्धानन्द की निन्दा-भर्त्सना करते हुए पोस्टर लगाए गए। मुरादाबाद में उनको आम सभाओं में बोलने से रोका गया। वे जहाँ-जहाँ भी किसी सभा में बोले, वहाँ-वहाँ सहस्रनामों से उनको गालियाँ देते हुए मुकाबले की सभाएँ की गईं।

वातावरण में दिन-ब-दिन उत्तेजना बढ़ती गई। मुस्लिम मताग्रहियों की दृष्टि में प्रधान शत्रु स्वामी श्रद्धानन्द बन गए। उनका आदर-मान करने वाले लोग इस आशंका से भयभीत रहने लगे कि न जाने कब कौन उन पर हमला करेगा। रक्षा के लिए कम-से-कम एक अंगरक्षक को नियुक्त करने का दबाव डाला गया, तो स्वामी जी बोले, ''कोई जरुरत नहीं। परमपिता ही मेरे रक्षक हैं।'' दिल्ली में रहते हुए मुस्लिम-बहुल इलाकों के आसपास टहलते समय उनके साथ चलने वालों के दिल की धड़कन बढ़ जाती थी कि जाने कब क्या हो, पर श्रद्धानन्द तो शान्त ही बने रहते थे।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

संस्था - समाचार

०१ से १५ सितम्बर २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सम्बन्धित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं चर्चा होती है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को प्रात:काल के प्रवचन में समसामयिक, सामाजिक, राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर व्याख्यान होता है। सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी, संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में अथर्ववेद के प्रथम सूक्त के मंत्रों की चर्चा करते हुए **डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि मंत्रों की बार-बार आवृत्ति करने से हम वेद से जुड़े रहते हैं। श्रद्धापूर्वक वेद पढ़ना चाहिये। बिना कारण छ: अंगों सहित वेद पढ़ना ब्राह्मण का कर्त्तव्य है, धर्म है। जितना-जितना हम विचार करते हैं, उतना-उतना वेद का महत्त्व हमें अधिक-अधिक अनुभव होता है। प्रत्येक मंत्र की गहराई में जाने पर मालूम होता है कि ऋषियों ने हमको वेद के मार्ग पर चलने का उपदेश क्यों दिया? ऋषियों का आग्रह रहता था कि कुछ भी करो, किन्तु वेद अवश्य पढ़ो। हमारे पूर्वज विद्वानों ने वेदों को हजारों-लाखों वर्षों से बचाकर रखने का प्रयत्न किया। अथर्ववेद में जादू, टोना, टोटका आदि नहीं है। वेदों में आध्यात्मिक और लौकिक दोनों प्रकार की विद्या है। जैसे धनुष के दोनों कोण बराबर होते हैं तभी लक्ष्य की प्राप्ति होती है, वैसे ही जब दोनों प्रकार से अर्थात् सांसारिक और पारलौकिक ज्ञान तथा कर्म में सन्तुलन होता है, तब सब दु:खों से निवृत्ति होती है। **'मय्येवास्तु मयि श्रुतम्'** विद्वानों के उपदेशों को सुनकर हृदयंगम करें, तभी वह हमारा अपना होता है, उसका हमें लाभ होता है। एक कान से सुनकर दूसरे से निकालें नहीं। **'सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि।'** हे प्रभु! हमें कभी भी ज्ञान से पृथक् मत कर। हम जो भी करें, भली प्रकार देखकर, सुनकर, सोच-समझकर करें, ज्ञान से विरुद्ध न करें। जब भी मनुष्य कोई पाप करता है, उस समय ज्ञान का अभाव होता है। ज्ञान के अभाव में मानसिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। मनुष्य भयभीत या क्रोधित हो जाता है। अथर्ववेद के पहले सूक्त में कही गई यह बात संसार की सर्वोच्च और सर्वमान्य बात है। दूसरों के द्वारा अपमानित करने पर अधिकांश लोग तत्काल प्रतिक्रिया करते हैं। क्रोध में आकर अपशब्द कहते हैं, मारने-पीटने लगते हैं। निन्दा करने वाले की तुरन्त निन्दा करते हैं। हमारे जीवन की घटनायें रासायनिक प्रक्रिया जैसी ही होती हैं। किसी रसायन में कोई अन्य रासायनिक पदार्थ मिलाते हैं तो प्रतिक्रिया स्वरूप कुछ और बन जाता है, वैसे ही हमारे सामने कुछ भी घटना होती है तो वह किसी भी इन्द्रिय से सम्बन्धित हो, एकदम से हमारे मस्तिष्क में प्रतिक्रिया होती है- चाहे वह अच्छी या बुरी हो, इच्छित या अनिच्छित हो, घृणा की हो या प्रेम की हो। तत्काल होने वाली प्रतिक्रिया संश्रुतेन नहीं होती है। महापुरुष तपस्या करते हुए अपने मन को रोकने का अभ्यास करते हैं, इसलिये वे लोगों के द्वारा अपमानित करने पर तत्काल प्रतिक्रिया नहीं करते। बहुत विचार करके उत्तर देते हैं अथवा शांत रहते हैं। साधारण मनुष्य भी मार्ग में चलते समय अवरोध, नाला, गहरा गड्ढा, पत्थर या अन्य हानिकारक वस्तु देखकर रुक जाता है अथवा रास्ता बदल लेता है। जैसे गतिशील वाहनों को रोकने के लिये उनमें ब्रेक होते हैं, उसी प्रकार परमात्मा

ने हमें बुद्धि प्रदान की है। मनुष्य चलता रहे और सामने दीवार आ जाये तो न रुकने पर दीवार से टकराकर पीड़ित हो जायेगा। मस्तिष्क ठीक होगा तो रुकेगा और कष्ट से बच जायेगा। हमारे शरीर में क्रिया करने और जानने वाली इन्द्रियाँ है तथा उसे नियंत्रित करने वाली बुद्धि भी है। जो सीखा है जाना है, उसका उपयोग करें, उसके विपरीत न चलें।

रविवार प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में दर्शन महाविद्यालय, रोजड़ से पधारे **आचार्य ज्ञानेश्वर जी** ने यज्ञ और उपासना के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये। वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ में प्रतिदिन दिनभर चलने वाले अग्निहोत्र यज्ञ के विषय में शंका समाधान तथा स्पष्टीकरण करते हुए उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर पर प्रतिदिन यज्ञ अवश्य करना चाहिये। अपने घर पर यज्ञ करने से जो लाभ होगा, वह अन्यत्र करने से नहीं हो सकता। अधिक समय नहीं हो तो कम समय में उत्साहपूर्वक यज्ञ करें, किन्तु यज्ञ अवश्य करें। घर का वातावरण शुद्ध होगा, बच्चों को संस्कार मिलेगा, वेदपाठ होगा, पड़ोसियों को भी प्रेरणा मिलेगी। जो किसी विवशता के कारण से घर पर यज्ञ नहीं कर सकते, वे आर्यसमाजों या यज्ञ करने वाली संस्थाओं में घी, सामग्री, समिधा, रुपये आदि दान कर सकते हैं। यज्ञ हेतु दान देने वाले को पुण्य मिलेगा। पृथ्वी का वायुमण्डल अत्यन्त दूषित हो चुका है। प्रदूषण को दूर करने का अन्य कोई उपाय नहीं है। अधिक से अधिक लोग श्रद्धापूर्वक अनिवार्य कर्त्तव्य समझकर निरन्तर यज्ञ करें।

आगे आपने बताया कि यह मानव जीवन बहुमूल्य है। बड़ी-बड़ी उपाधि प्राप्त करना, कला-कौशल सीखना, धन कमाना, भवन निर्माण करना तथा पारिवारिक सुख आदि साधन मात्र हैं। अन्तिम लक्ष्य है मानसिक शान्ति, तृप्ति, आनन्द, परमपिता परमात्मा की अनुभूति। इसके लिये तपस्या बहुत आवश्यक है। जीवन के प्रत्येक क्षण का उपयोग करें। जीवन का उद्देश्य दु:खों से छूटकर आनन्द प्राप्त करना है। हमें अपनी आत्मा को पवित्र करना है, विज्ञानमय बनाना है और बन्धनों से छूट जाना है। ईश्वर साक्षात्कार से विशेष ज्ञान, बल प्राप्त कर जीवन को पवित्र बनाना है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या-द्वेष को छोड़ें। श्रेय मार्ग के पथिक बनें। प्रत्येक पल में ईश्वर के आनन्द की अनुभूति करें। प्रात:-सायं दोनों समय अथवा एक समय जैसे और जितना समय मिले, ईश्वर का ध्यान अवश्य करना चाहिये। ध्यान से शारीरिक, मानसिक क्लेश नष्ट होते हैं। मन में धैर्य, क्षमा, सेवा, परोपकार, सत्संग, निष्कामता आदि की भावना जाग्रत होती है। ईश्वर के प्रति विश्वास बढ़ता है। हम सबको इसी जीवन में त्रिविध दु:खों से छूटना है, वह ध्यान-उपासना से ही प्राप्त हो सकता है।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में ऋग्वेद के चौथे मण्डल के सत्रहवें सूक्त के बारहवें मंत्र के महर्षि दयानंद कृत पदार्थ और भावार्थ पर चर्चा करते हुए **आचार्य सत्यजित् जी** ने कहा कि प्रजाजनों में वही मनुष्य राजा बनने के योग्य होता है जो बुद्धिमान्, बलवान होने के साथ ही दूसरों के किये उपकार को मानकर, कृतज्ञ होकर प्रत्युपकार करता हो। कृतज्ञता के संस्कार बचपन से ही माता-पिता, वृद्ध लोगों के सदुपदेश और आशीर्वाद से मिलते हैं। संस्कारित व्यक्ति बड़ा होकर भी अपने माता-पिता, गुरुजनों, समाज तथा राष्ट्र के उपकारों को जानता, मानता है और सेवा, सत्कार, कल्याण के लिये सदा तत्पर रहता है। कृतज्ञ मनुष्य का यश सब जगह फैलता है। उसको ही सब वृद्ध, विद्वान्, बलवान और यशस्वी लोग अपने नेता या राजा के रूप में स्वीकार करते हैं। उसी को निरन्तर सबका सहयोग मिलता है। यदि ऐसा व्यक्ति राजा बनता है तो उसे कोई भी शत्रु युद्ध में पराजित नहीं कर सकता। शत्रु बार-बार हमला करेगा, फिर भी जीत नहीं सकेगा। वह बिजली के समान शीघ्र शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। वही सफलता पूर्वक दीर्घकाल तक शासन करता है। आजकल के नेता/शासक चुनाव के समय हाथ जोड़कर विनम्रता दिखाते हैं और चुनाव जीतने के बाद नजर नहीं आते। ऐसे कृतघ्न मनुष्यों के राजा बनने पर जनता को कोई विशेष लाभ नहीं होता। जो नेता बनकर जनता के निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं, वे ही कृतज्ञ, कर्त्तव्यनिष्ठ लोग राष्ट्र के लिये हितकारी कार्य करते हैं।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **आचार्य सोमदेव जी** ने बताया कि जीवन को ठीक से जीने के लिये सिद्धान्तों की स्पष्टता बहुत आवश्यक है। स्पष्टवादी, सिद्धान्तनिष्ठ एवं निष्पक्ष व्यक्तियों का आचरण और जीवन उनकी वाणी के अनुकूल श्रेष्ठ होता है, दूसरों के लिये अनुकरणीय होता है। ऐसे अनेक समर्पित युवक, जिनके मन में वैदिक

धर्म के प्रचार-प्रसार के लिये तड़प है, वे तन्मयता से दिन-रात कार्य कर रहे हैं। वे सरल, विनम्र और उदार हैं एवं प्रसिद्धि तथा प्रशंसा से दूर अनेक कष्ट सहन करते हुए भी कार्य कर रहे हैं। मान-सम्मान और फोटो खिंचवाने में उनकी कोई रुचि नहीं है। जो ऋषि के दीवाने हैं, उन्हें आर्यसमाज में काम करना अच्छा लगता है। संगठन को मजबूत करना और निरन्तर आगे बढ़ाना उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। समाज/संगठन में आवश्यक कार्य होने पर अपने पारिवारिक और व्यवसायिक कर्त्तव्यों का पालन करते हुए भी वे समय निकाल लेते हैं। हमारे विद्वानों ने आर्यसमाज की उन्नति और अवनति दोनों देखी हैं। जब हमारे विद्वान् और कार्यकर्ता महर्षि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रति निष्ठावान् थे, उस समय समाज की बहुत उन्नति हुई। हैदराबाद रियासत को भारत में विलय करने के पश्चात् सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा था कि आर्यसमाज के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था। लौह पुरुष कहलाने वाला नेता भी आर्यसमाज का लोहा मानता था। अंग्रेज अधिकारी भी आर्य समाज से भयभीत रहते थे। आर्यसमाज को धार्मिक विद्रोही संगठन मानते थे, किन्तु जब विद्वानों और कार्यकर्ताओं ने सिद्धान्तों को छोड़ दिया, केवल पैसों के लिये काम करने लगे, तब अवनति होती चली गई।

पड़ोसी देश नेपाल में आर्यसमाज के प्रचार की बहुत आवश्यकता है। वहाँ पर गरीबी है और लोग भोले-भाले हैं, कोई भी उन्हें बहका लेता है। अभी सतपाल महाराज, जयगुरुदेव, ब्रह्माकुमारी संस्था वाले काम कर रहे हैं। आर्यसमाज के पुरोहितों, विद्वानों को स्थायी रूप से वहाँ रहकर काम करना चाहिये। ईसाई मिशनरी हजारों लोगों को ईसाई बना रही है। एक समय था जब महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त **श्री शुक्रराज शास्त्री** ने वहाँ पर बहुत बड़ा कार्य किया। जातिवाद, मूर्तिपूजा, रुढ़ि आदि को समाप्त करने के लिए दिन-रात लगे रहे। उस समय नेपाल के राजा पौराणिक थे। वे वेद प्रचार को सहन नहीं कर पाये और शुक्रराज शास्त्री को मृत्युदंड दे दिया। समय रहते हमारे अनेक कार्यकर्ताओं को नेपाल जाकर नेपाली भाषा के सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहित्य का बड़े पैमाने पर प्रचार-प्रसार करना चाहिये। विद्वान् तो बिना बुलाये जाते नहीं हैं और वे मार्ग व्यय, दक्षिणा, आवास आदि की सुविधा न मिलने से अप्रसन्न हो जाते हैं। पुराने आर्यसमाजों में कितने भी व्याख्यान, भजनोपदेश करवाये जायें, सुनने वाले पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। नये-नये स्थानों में, गाँव-गाँव में प्रचार की बहुत बड़ी आवश्यकता है।

प्रात:कालीन प्रवचन में वरुण सूक्त की चर्चा करते हुए **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने बताया कि परमात्मा के अनेक नामों में एक नाम वरुण भी है। वेदमन्त्रों के ईश्वर सम्बन्धी अर्थ वाले मन्त्र के अध्यात्मपरक, भौतिकवाद, राष्ट्रपरक अर्थ भी हो सकते हैं। यह गम्भीर चिन्तन, मनन, अध्ययन का विषय है। वेद परमेश्वर की कल्याणी वाणी है। उसमें ईश्वर विषय तो है ही, साथ ही साथ जीवों के उपकार के लिये सांसारिक ज्ञान देने वाले अर्थ भी हैं, क्योंकि वेद का उपदेश मनुष्य तथा सब जीवों के कल्याण के लिये ही है। मनुष्य का स्वाभाविक ज्ञान इतना नहीं होता कि जीवन को श्रेष्ठ ढंग से जी सके, इसलिये ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में ही वेदज्ञान दिया। महर्षि दयानन्द जी के वेदभाष्य में किस विषय की चर्चा है-यह सब सरलता पूर्वक पढ़ने वाले को मालूम हो जाता है। महर्षि दयानन्द जी के बाद आर्यसमाज के विद्वानों ने परिश्रम करके वेदमन्त्रों की व्याख्या के लिये अनेक पुस्तकें लिखी हैं। वरुण शब्द का अर्थ इन्द्र, मित्र, अग्नि आदि भी प्रकरण के अनुकूल होते हैं। ऋग्वेद में वरुण सूक्त है। इस सूक्त का प्रतिपाद्य विषय परमात्मा है, जो मोक्ष के बाद पुनर्जन्म में जीवों को माता-पिता के दर्शन कराता है। सब जीवों को कर्मफल के अनुसार भोग के लिये इस पृथिवी पर शरीर धारण करवाता है। ईश्वर के कार्य में कहीं कोई भूल-चूक नहीं है। वह पूर्ण विद्वान् है, इसलिये उससे कर्मफल देने में कोई त्रुटि नहीं होती है। जाति, आयु और भोग की गणना जीवों के कर्मानुसार ही होती है।

शिक्षक दिवस सम्पन्न-शिक्षक दिवस का महत्त्व दर्शाते हुए **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने बताया कि जिस महापुरुष के जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में पूरे देश में उल्लासपूर्वक मनाया जाता है, वे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति रहते हुए भी उनका रहन-सहन, खान-पान, दिनचर्या अध्यापक जैसा ही था। इसी दिन पूरे देश भर के श्रेष्ठ शिक्षकों को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार दिया जाता है। वे एक महान् देशभक्त और स्पष्टवक्ता विद्वान् थे। वे बीसवीं शताब्दी के विश्वविख्यात दार्शनिकों

में एक थे। वे जहाँ भी रहे, पठन-पाठन का कार्य करते रहे। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उपकुलपति, सोवियत रूस में राजदूत और बाद में हमारे देश के राष्ट्रपति के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पूरी ईमानदारी से पालन किया। वे इन बड़े-बड़े पदों पर कार्यरत रहने पर भी स्वयं को शिक्षक कहलवाना पसंद करते थे। अंग्रेजी भाषा का भी उन्हें पर्याप्त ज्ञान था। राष्ट्र निर्माण में कुशल शिक्षक के रूप में उनकी भूमिका अतुलनीय है।

प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य कर्मवीर जी** ने कहा कि संसार में सब व्यक्ति उन्नति करना चाहते हैं। उन्नति दो प्रकार की होती है-पहली सांसारिक और दूसरी आध्यात्मिक। सांसारिक उन्नति के लिए भौतिक साधनों की आवश्यकता होती है। आध्यात्मिक उन्नति के लिए साधना आत्मा और परमात्मा को जानना ही मूल है। हमारे पूर्वज ऋषियों ने हमें साधना के मार्ग पर ज्ञानपूर्वक चलने के लिये उपदेश किया है। महर्षि पतंजलि ने चार पादों में योगदर्शन की रचना की है। उसके साधन पाद में योग की मध्यम स्थिति प्राप्त लोगों के लिये क्रियायोग के तीन लक्षण बताये हैं- तप, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान। इन तीनों में उत्तरोत्तर वरीयता है। तप से अधिक महत्त्वपूर्ण स्वाध्याय है। तप और स्वाध्याय से भी अधिक महत्त्व ईश्वरप्रणिधान का है। धर्म के मार्ग पर चलते हुए सुख-दु:ख आदि द्वन्द्वों को सहन करना तप है। स्वाध्याय के बिना तप का पूर्ण लाभ नहीं हो सकता, किन्तु हानि की सम्भावना रहती है। ओम् का जप, आत्मा-परमात्मा और प्रकृति के यथार्थ स्वरूप का बोध कराने वाले शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन करना स्वाध्याय है। स्वाध्याय के बिना तप के विषय में भ्रान्ति हो सकती है। स्वाध्याय से धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ठीक-ठीक बोध होता है। स्वाध्याय से विवेक होता है, उससे वैराग्य उत्पन्न होता है। स्वाध्याय से श्रद्धा उत्पन्न होती है। श्रद्धा से मनुष्य बहुत संवेदनशील हो जाता है। जिस बुद्धिमान् व्यक्ति के मन में श्रद्धा और संवेदनशीलता नहीं होती, वह संसार का सबसे खतरनाक मनुष्य होता है। वह अपने और पराये की हानि में ही लगा रहता है, जैसे-आतंकवादी। अकर्त्तव्य को छोड़कर कर्त्तव्य को करना ही विवेक है। विद्या प्राप्त करने के लिये आँखें खुली रखते हैं तो संसार का ज्ञान होता है। एकान्त में आँखें बन्द कर प्रणव का जाप करने से आत्मा और परमात्मा का बोध होता है। ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर अपने दोषों को दूर करने और गुणों को धारण करने में सरलता होती है। प्रात:-सायं दोनों समय ध्यान-उपासना करने से मन की पवित्रता बढ़ती है। काम, क्रोध, लोभ आदि दुर्गुणों का नाश होता है। दूसरे मनुष्यों के प्रति सेवा और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है। अहंकार का नाश होकर कर्त्तव्यों का बोध होता है।

सायंकालीन सत्संग में सभा मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज के नियम बनाते हुए एक बात लिखी है-सबको अपनी शारीरिक उन्नति सबसे पहले करनी चाहिये। शारीरिक उन्नति से ही आत्मिक उन्नति सम्भव है। शारीरिक और आत्मिक उन्नति से ही सामाजिक उन्नति होगी। इसके विपरीत शारीरिक दुर्बलता, न्यूनता, रोग आदि से आत्मिक और सामाजिक उन्नति नहीं हो सकती। स्वास्थ्य के नियमों का पालन करके ही शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक बल का विकास होता है। पौष्टिक भोजन और व्यायाम से हम बलवान बन सकते हैं। जिसमें बल नहीं है, वह भोग नहीं कर सकता। इन तीनों के बिना व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक जीवन में सुख नहीं मिलता है। अन्य किसी महापुरुष ने इस प्रकार के विचार नहीं दिये। शास्त्र में भी कहा गया है -'वीर भोग्या वसुन्धरा'। स्वस्थ और बलवान मनुष्य ही इस संसार में सुख प्राप्त कर सकता है। हमारे देश के राजा शरीर से तो स्वस्थ और बलवान थे, लेकिन संगठित नहीं रहते थे, आपस में लड़ते रहते थे, इसलिये इस देश में मुगलों का शासन स्थापित हो गया। औरंगजेब के दरबार में राजा जसवन्त सिंह रहते थे। औरंगजेब के शिकारियों ने एक बब्बर शेर पकड़ा। राजा जसवंत सिंह ने अपने पुत्र पृथ्वी सिंह को उस शेर से लड़वाया। उसकी वीरता को देखकर औरंगजेब घबरा गया। राजस्थान इस प्रकार के अनेक शूरवीर राजाओं की भूमि है। बड़े-बड़े वीर पुरुष आपस में लड़ने के कारण समाप्त हो गये। सबको शारीरिक बल बढ़ाना चाहिये और संगठित भी रहना चाहिये, तभी यह देश सुरक्षित रहेगा।

शनिवार सायंकालीन सत्र में वानप्रस्थी **श्री बलेश्वर मुनि जी** ने कहा कि राष्ट्र को सुदृढ़ करने के लिये जात-पात, छुआछूत को समाज से दूर करना होगा। केरल, उ. प्र. तथा देश के अन्य भागों में हिन्दुओं की जनसंख्या घटना

और ईसाई, मुसलमानों की संख्या बढ़ना देश के लिये गम्भीर चुनौती है। जो हमारे सेवक वर्ग थे, उनकी हमने उपेक्षा की, इसलिये वे विधर्मी हो गये। यदि समय रहते हम अपनी मानसिकता नहीं बदलेंगे तो भविष्य में स्थिति और बिगड़ सकती है। दलित वर्ग को हमें अपने पास लाना होगा और अपने धार्मिक, सामाजिक कार्यों तथा उत्सवों में उनको शामिल करना होगा।

रविवारीय सायंकालीन प्रवचन के क्रम में **ब्र. दिलीप जी** ने विश्वास, अविश्वास और अन्धविश्वास शब्दों को परिभाषित करते हुए प्रत्यक्ष, अनुमान तथा आगम प्रमाण के आधार पर उनकी व्याख्या की। उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि किसी मनुष्य पर विश्वास करने के कारण कभी लाभ तो कभी हानि भी हो जाती है। निरन्तर लाभ होते रहने पर विश्वास बना रहता है, किन्तु हानि होने पर विश्वास के स्थान पर अविश्वास हो जाता है। बिना प्रमाण कल्पना के आधार पर दूसरे की बातों में विश्वास करना अन्धविश्वास है।

विशिष्ट व्यक्तित्व-शनिवार ३ सितम्बर को जयपुर से दैनिक भास्कर के मैनेजिंग डायरेक्टर **श्री जगदीश शर्मा जी** सपरिवार ऋषि उद्यान पधारे। वे ऋषि मिशन के एक निष्ठावान कार्यकर्ता हैं, परोपकारिणी सभा के निरंतर सम्पर्क में रहते हैं। उनकी पत्नी एवं पुत्री भी आर्य समाज, आर्य वीरांगना दल के कार्यों में संलग्न रहती हैं। इसी दिन ऋषि उद्यान में दर्शनों का अध्ययन कर रहीं माता रश्मि जी के सुपुत्र श्री अखिलेश चन्द्र आर्य का जन्मदिवस मनाया गया। दूसरे दिन रविवार ४ सितम्बर को प्रातःकाल यज्ञ के समय स्वामी मुक्तानन्द जी के ब्रह्मत्व में श्री अखिलेश जी के बच्चों का **अन्नप्राशन संस्कार** सम्पन्न हुआ।

*** डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) १-६ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज बैंगलोर।

(ख) २२-२५ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज नेपियर टाऊन, जबलपुर।

(ग) २७ सितम्बर से ०३ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज पिलखुआ।

आगामी कार्यक्रमः- (क) १२-१९ अक्टूबर २०१६: योग शिविर ऋषि उद्यान, अजमेर।

(ख) २२-२३ अक्टूबर २०१६: गुरुकुल लाढ़ौत, हरियाणा।

(ग) १४-१६ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज केसरगंज, अजमेर।

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ०३-०६ सितम्बर २०१६: आर्य समाज गोमाना (छोटी सादड़ी) में यज्ञ, प्रवचन।

(ख) ०९-१५ सितम्बर २०१६: श्री रामकुमार जी मानधना, मुम्बई में पारिवारिक कार्यक्रम।

(ग) १८-१९ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज सहारनपुर में सम्मेलन।

(घ) २८-३० सितम्बर २०१६: आर्यसमाज चन्देना सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

आगामी कार्यक्रमः-(क) ०२ अक्टूबर २०१६: दयानन्द मठ रोहतक के मासिक सत्संग में मुख्य वक्ता।

(ख) ०३-०९ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज से. १५ के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(ग) १०-११ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज लोहाना, रेवाड़ी के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(घ) १२-१८ अक्टूबर २०१६: योगशिविर ऋषि उद्यान, अजमेर।

(ङ) १९-२३ अक्टूबर २०१६: आर्यसमाज मॉडल टाऊन, हिसार के वार्षिकोत्सव में।

(च) २४-२७ अक्टूबर २०१६: वेद मन्दिर चाँदपुरा, बिजनौर।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रमः- (क) ११-१३ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज नांगल, सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

(ख) १८-१९ सितम्बर २०१६: आर्यसमाज कुकावी, सहारनपुर का वार्षिकोत्सव।

(ग) २५-२७ सितम्बर २०१६- रिंगस, राजस्थान।

आगामी कार्यक्रमः-(क) २२-२३ अक्टूबर २०१६: ईशापुर गाँव, दिल्ली।

(ख) २५-२९ अक्टूबर २०१६: योग साधना शिविर सिंहपुरा, रोहतक, हरियाणा।

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ सितम्बर २०१६ तक)

१. श्री देवमुनि, अजमेर २. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ३. वाचस्पति आर्य, दिल्ली ४. श्री रण सिंह आर्य, दिल्ली ५. श्रीमती अनिता यादव, जयपुर, राज. ६. श्री घनश्याम कुन्दवानी, सूरत, गुजरात ७. मै. राधाकिशन मोतीलाल रावत, अहमदाबाद, गुजरात ८. श्री देवेन्द्र सिंह तोमर, उद्यमसिंह नगर, उ.प्र. ९. आर्य रनवीर सिंह व गुरुदेव सिंह, पानीपत, हरियाणा १०. श्री प्रणवमुनि, जयपुर, राज. ११. श्री नरेन्द्र कुमार रस्तोगी, मुम्बई, महाराष्ट्र १२. श्रीमती ज्योति अहूजा, मेरठ, उ.प्र. १३. श्री दुर्गाप्रसाद शर्मा, रेवाड़ी, हरियाणा १४. श्री राहुल साहू, भरतपुर, राज. १५. श्री किशोर काबरा, अजमेर १६. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर १७. सुश्री भाव्या नवाल, ब्यावर, राज. १८. डॉ. रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १९. श्रीमती शान्ति देवी, रोहतक, हरियाणा २०. श्री ब्रह्ममुनि, अजमेर २१. श्री विजय सिंह गहलोत व श्रीमती कंचन गहलोत, अजमेर २२. श्री सेवक राम आर्य, लखनऊ, उ.प्र. २३. श्री नरपत सिंह आर्य, जालौर, राज.० २४. श्री बंसीलाल आर्य, लखनऊ, उ.प्र. २५. श्रीमती रश्मिप्रभा शास्त्री, अजमेर २६.श्री प्रियव्रत प्रधान, नई दिल्ली २७. श्रीमती उमा मोंगा, दिल्ली २८. श्री शिवकुमार मदान, नई दिल्ली २९. श्रीमती उषा मारवाहा व स्व. श्री जगदीशचन्द्र मारवाहा, नई दिल्ली ३०. श्री अमृतपाल, नई दिल्ली ३१. श्रीमती रानी आनन्द, नई दिल्ली ३२. श्री कपिल गुप्ता, नई दिल्ली ३३. श्रीमती रंजना आर्या व नरेन्द्र आर्य, बैंगलोर ३४. स्वास्तिकामा चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र ३५. श्री आदर्श सक्सेना, कोटा, राज. ३६. सुश्री यशोदा रानी, कोटा, राज. ३७. श्री अनुपम आर्य, गुडगाँव, हरियाणा ३८. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली ३९. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ४०. श्री अशोक अग्निहोत्री, इलाहाबाद, उ.प्र. ४१. श्री जगदीश प्रसाद, अजमेर ४२. श्री शैतान सिंह यादव, जयपुर, राज. ४३. मेहता माता जी, अजमेर ४४. श्री नगेन्द्र, पूर्वीचम्पारन, बिहार ४५. श्री ईश्वर सिंह, रेवाड़ी, हरियाणा ४६. श्री बद्री प्रसाद पंचोली व श्रीमती कमला देवी पंचोली ४७. श्री अभय देव, गाजियाबाद, उ.प्र. ४८. श्री बलवीर सिंह बत्रा व श्रीमती शान्ता बत्रा, नई दिल्ली ४९. श्री ओम, झज्जर, हरियाणा ५०. श्री श्रद्धानन्द, दिल्ली ५१. श्री एस.एम. विकल, लुधियाना, पंजाब ५२. अवनीश कपूर, दिल्ली।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ सितम्बर २०१६ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्री राजेन्द्र कुमार सिंघल, अजमेर ३. श्री अनुज मिश्रा, अजमेर ४. श्री बृहस्पति आर्य, दिल्ली ५. श्रीमती प्रेमलता, अजमेर ६. आर्य समाज, लुधियाना, पंजाब ७. श्रीमती रतन देवी, अजमेर ८. श्री जयपाल आर्य, अजमेर ९. जाटवेद आर्य, अजमेर १०. श्रीमती हेमलता वर्मा, अजमेर ११. निधि आर्या, नोयड़ा, उ.प्र. १२. श्री रामबीर खत्री, दिल्ली १३. श्रीमती कान्ता, अजमेर १४. श्री अमरीश डागा, कोलकाता, पश्चिम बंगाल १५. श्रीमती वेदवती शर्मा, उदयपुर, राज. १६. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर १७. श्री कृष्णगोपाल आर्य, अजमेर १८. श्रीमती कमला

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३५ पर.....

कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?

(इस्लाम के मतावलम्बी कुर्बानी करने के लिए प्राय: बड़े आग्रही एवं उत्साही बने रहते हैं। इसके लिए उनका दावा रहता है कि पशु की कुर्बानी करना उनका धार्मिक कर्त्तव्य है और इसके लिए उनकी धर्मपुस्तक कुरान शरीफ में आदेश है। हम श्री एस.पी. शुक्ला, विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट लखनऊ द्वारा दिया गया एक फैसला पाठकों के लाभार्थ यहाँ दे रहे हैं, जिसमें यह कहा गया है कि ''गाय, बैल, भैंस आदि जानवरों की कुर्बानी धार्मिक दृष्टि से अनिवार्य नहीं।'' इस पूरे वाद का विवरण पुस्तिका के रूप में वर्ष १९८३ में नगर आर्य समाज, गंगा प्रसाद रोड (रकाबगंज) लखनऊ द्वारा प्रकाशित किया गया था। विद्वान् मुंसिफ मजिस्ट्रेट द्वारा घोषित निर्णय सार्वजनिक महत्त्व का है-एक तर्कपूर्ण मीमांसा, एक विधि विशेषज्ञ द्वारा की गयी विवेचना से सभी को अवगत होना चाहिए-एतदर्थ इस निर्णय का ज्यों का त्यों प्रकाशन बिना किसी टिप्पणी के आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। -**सम्पादक**)

कुर्बानी कुरान के विरुद्ध?

पिछले अंक का शेष भाग

विवाद्यक नं. १,२,३ व ५

विवाद्यक नं. १ व २ को सिद्ध करने का भार वादीगण पर है। विवाद्यक नं. ३ व ५ को सिद्ध करने का भार प्रतिवादीगण पर है। यह विवाद्यक एक दूसरे पर आधारित है। अत: इनकी व्याख्या अलग-अलग कर पाना सम्भव नहीं है। अत: न्याय की सुगमता के लिए ये विवाद्यक एक साथ निर्णीत किया जाना अधिक उपयुक्त एवं उचित होगा।

विवाद्यक नं. १ के सम्बन्ध में वादी साक्षी नं.-१ राम आसरे, वादी साक्षी सं. २ महन्त विद्याधर दास को परीक्षित किया गया। इन दोनों साक्षीगण ने शपथ पर न्यायालय में बयान दिया और कहा कि ग्राम सहिलामऊ में भैंस-भैंसा की कुर्बानी बकरीद के अवसर पर नहीं होती रही है, केवल बकरे की कुर्बानी मुसलमान भाई करते थे, जिसे कभी भी हिन्दुओं ने नहीं रोका और जिससे धार्मिक सद्भाव, सहिष्णुता, सद्व्यवहार, सदाचार एवं सहयोग का वातावरण बना हुआ था, परन्तु श्री मोहम्मद रफीकुद्दीन के गाँव में आने पर भैसों की कुर्बानी करवाने से गाँव में साम्प्रदायिक तनाव, विद्वेष व घृणा का वातावरण पनप गया। धर्म की आड़ लेकर रफीकुद्दीन भोलीभाली निरीह जनता को आपस में लड़वाना चाहते हैं। इन साक्षीगण के अनुसार ग्राम सहिलामऊ में कभी भी भैंसे की कुर्बानी नहीं दी गई। पृच्छा में भी इन साक्षियों से कोई विशेष बात प्रतिवादीगण के विद्वान् अधिवक्ता नहीं निकाल पाये हैं, जिसके आधार पर यह कहा जा सके कि ग्राम सहिलामऊ में इस घटना के पहले भी भैंस-भैसों की कुर्बानी हुआ करती थी।

इसके विपरीत प्रतिवादीगण की ओर से प्रतिवादी साक्षी नं. १ सैयदअली, दीन मोहम्मद, फारुक को परीक्षित किया गया, जिन्होंने कहा कि इस गाँव में आजादी के पहले गाय की भी कुर्बानी होती थी। भेड़, भेड़ा, बकरी, बकरा, गाय-बैल, ऊँट-ऊँटनी की कुर्बानी का मजहबी प्राविधान इन लोगों ने बताया और कहा कि इस गाँव में भैंसे की कुर्बानी पहले होती थी, जिससे कोई घृणा का वातावरण नहीं बना। वादीगण धार्मिक आड़ में प्रतिवादीगण की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाना चाहते हैं। इन साक्षीगण की साक्ष्य को पृच्छा की कसौटी पर कसा गया, तो सफाई साक्षी नं. १ सैयद अली ने स्वीकार किया और यह भी कहा कि हिन्दुओं ने मुर्गे की कुर्बानी पर कोई एतराज नहीं किया और इस साक्षी ने यह स्वीकार किया कि सन् ६४-६५ में जब राजबहादुर थाना मलिहाबाद में दरोगा थे, तब कुर्बानी की बात उठी थी, लेकिन सुलह हो गई थी। इस गाँव में कोई भी बूचड़खाना नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है यदि किसी बड़े जानवर की कुर्बानी की जायेगी तो दूसरे लोगों को यानि हिन्दुओं को भी पता चलेगा, जिससे बड़ा बखेड़ा होगा जैसा कि यह प्रतिवादी सन् ६४-६५ की वारदात स्वीकार करता है। साक्षी नं. ३ मोहम्मद फारुख ने भी पृच्छा में स्वीकार किया है कि सन् १९७९ में १७ बकरों की कुर्बानी दी गई, जिसमें से १४ बकरों को कुर्बानी न्यायालय से मिले पैसे से हुई थी और तीन बकरों का इन्तजाम उन्होंने स्वयं किया था। इस साक्षी एवं सैयद अली ने भी पृच्छा में स्वीकार किया है कि खून हड्डियाँ

एवं बाल आदि को गड़वाने वाली बात जवाब दावा में नहीं लिखी गयी है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि ये बातें इन साक्षियों ने सोच विचारकर न्यायालय में बताई हैं और न ही इन साक्षियों ने कुर्बानी बन्द करने की बात कही है, बल्कि पृच्छा में यह बात बताई जो कि विचारकर कहना प्रतीत होती है। ऐसी दशा में यदि यह कुर्बानी स्वतन्त्रतापूर्वक होती है, तो निश्चय ही हिन्दुओं को इस बात का पता लगा होता और तनाव बढ़ता।

यहाँ पर यह भी कहना अनुचित न होगा कि सफाई साक्षी सं. ५ मो. रफीकुद्दीन जो सम्पूर्ण कलह की जड़ कहे जाते हैं और ग्राम सहिलामऊ में मस्जिद में नमाज पढ़ाते हैं तथा गाँव के मुसलमानों के धार्मिक गुरु हैं, उन्होंने पृच्छा में इस बात को स्वीकार किया कि भैंस जानवर जिवा करते हैं, वह उसका कोई रिकार्ड नहीं रखते हैं। हाजी सैयद अली मस्जिद में मुतबल्ली हैं और उनके पास कुर्बानी का पूरा रिकार्ड रहता है, उसमें कुर्बानी के जानवरों की जाति लिखी जाती है। और कुर्बानी किस-किस ने कराया उसका नाम लिखा जाता है। हाजी सैयद अली इस मुकद्दमे में प्रतिवादी नं. ७ हैं, परन्तु न्यायालय में मेरे समक्ष तथाकथित अभिलेख प्रस्तुत नहीं किया गया, जिसके आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता कि ग्राम सहिलामऊ में कुर्बानी काफी पुराने समय से चली आ रही है। वह अभिलेख प्रतिवादी नं. ७ के पास है जो महत्त्वपूर्ण अभिलेख है, जिसको प्रस्तुत करने का दायित्व प्रतिवादी नं. ७ पर है। इसको प्रस्तुत न करने से अनुमान प्रतिवादीगण के विरुद्ध लगाया जायेगा। सैयद अली प्रतिवादी नं. ७ प्रतिवादी साक्षी नं. १के रूप में न्यायालय में परीक्षित हुए हैं, इन्होंने उक्त अभिलेखों के बावजूद एक शब्द भी नहीं कहा। इस साक्षी का बयान स्वयं में विरोधाभासी है। उसने अपने मुख्य कथन में यह कहा है कि इस गाँव में आजादी के पहले गाय की बलि होती थी और उसके पहले भैंसे-भैंसों की बलि होती रही है। पृच्छा में यह साक्षी स्वीकार करता है कि उसके मजहब में गाय और भेड़ की कुर्बानी की इजाजत नहीं है। ऐसी दशा में इसका स्वयं का कथन संदेहास्पद है।

उपरोक्त व्याख्या के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि विवादित घटना से पहले ग्राम सहिलामऊ में भैंसे की कुर्बानी नहीं होती रही थी। विवाद्यक नं १ व २ तदनुसार वादीगण के अनुकूल एवं प्रतिवादी गण के प्रतिकूल निर्णीत किये गये।

विवाद्यक नं. ३ व ५

के बावत उभय पक्ष की ओर से तर्क दिये गये। प्रतिवादीगण ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ व २६ का सहारा लेकर अभिकथित किया कि मुसलमानों को कुर्बानी करने का मौलिक अधिकार प्रदत्त है और उससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता। यह नि:संदेह सत्य है कि धार्मिक स्वतन्त्रता का प्रावधान भारतीय संविधान में निहित है और धर्म निरपेक्षता इस संविधान की विशेषता है, परन्तु संविधान में मौलिक अधिकारों के तहत किसी विशेष धर्म को विकसित करने, परिपोषित करने व प्रचार करने की सुविधा सरकार द्वारा प्रदत्त नहीं की गयी है, बल्कि उस धर्म के अनुयाइयों को अपने धर्म के विकास करने की सुविधा की स्वतन्त्रता है, परन्तु यह स्वतन्त्रता असीमित, अनियमित नहीं है। धार्मिक स्वतन्त्रता भारतीय संविधान में वहीं तक प्रदत्त है, जहाँ तक दूसरे धर्मवालों की भावनाओं पर कुठाराघात न हो, परन्तु जहाँ जिस धार्मिक भावना द्वारा दूसरे धर्म के लोगों की धार्मिक भावना का कुठाराघात होता है, वह धार्मिक स्वतन्त्रता नहीं दी गयी है।

मैं विद्वान् अधिवक्ता के इस तर्क से पूर्णत: सहमत हूँ कि धार्मिक स्वतन्त्रता का प्राविधान भारतीय संविधान में प्रदत्त है, परन्तु इससे दूसरे के धर्म को आघात पहुँचाने का अधिकार नहीं मिलता है। जहाँ तक कुर्बानी मजहब का अंग है, इस सम्बन्ध में हाजी मो. रफीकुद्दीन को परीक्षित किया गया। वही तथाकथित मुसलमानों के धार्मिक गुरु ग्राम सहिलामऊ में हैं, उनके समक्ष सम्पूर्ण पाक कुरान शरीफ रखी गयी और उनसे कहा गया कि वह न्यायालय को बतायें कि पाक कुरान शरीफ में कुर्बानी का प्राविधान कहाँ पर है और विशेषत: भैंसे की कुर्बानी कहाँ पर दी गई है, परन्तु वह कोई भी ऐसा सन्दर्भ पाक कुरान शरीफ में निकालकर दिखाने में असमर्थ रहे हैं। उन्होंने केवल पाक कुरान शरीफ की कुछ आयतों का सन्दर्भ दिया। उनके अनुसार केवल पाक कुरान शरीफ सूरे हज्ज के पारा-१७

रूकू १२ के अनुसार कुर्बानी फर्ज है, लेकिन जब उन्हें कुरान शरीफ दी गई तो वह दिखा नहीं सके, बल्कि सूरे हज्ज की आयत ३६ में यह कहा कि अल्लाह के नजदीक न इसका गोश्त पहुँचता है और न ही खाल, लेकिन नीयत पहुँचती है। अल्लाह ताला नीयत को देखता है, जानवर को नहीं देखता। सूरे हज्जरूक ५ आयत ३ में यह लिखा है कि खुदा तक न तो कुर्बानी का मांस पहुँचता है और न ही खून, बल्कि उनके पास तुम्हारी श्रद्धा भक्ति पहुँचती है, यह कहना साक्षी ने गलत बताया। कुर्बानी की दुआ इस साक्षी ने सूरे इनाम रूकू १४ पारा ७ आयत ७६ बताया और फिर बाद में ७८ कहा, परन्तु जब यह पूछा गया कि कुर्बानी फर्ज है, कहाँ पर लिखा है, तो यह बताने में साक्षी असमर्थ रहा। इस साक्षी को पाक कुरान शरीफ के प्रकाशक भुवन वाणी का शास्त्रीय अरबी पद्धति पर हिन्दी में संस्कारण दिखाया गया तो, उसने कहा कि इस ग्रन्थ के पेज नं. ५६० में सूरे हज्ज १७ वें पारे में ११ वें रूकू में ३३ वीं आयत में यह लिखा है कि ''हमने हर जमात के लिए कुर्बानी के तरीके मुकर्रर किये हैं, जो हमने उनको चौपाये जानवरों में से अनाम किये हैं। कुर्बानी करते हुए अल्लाह का नाम लें।'' इस साक्षी ने यह स्वीकार किया कि इसमें कुर्बानी फर्ज है, इसका जिक्र नहीं है। इस साक्षी ने अन्त में विवश होकर यह स्वीकार कर लिया कि हाफिज का मतलब पाक कुरान शरीफ हिफ्ज होने से अर्थात् रटे होने से है। पाक कुरान शरीफ की आयतों का अर्थ जानने से नहीं है। मुझे कुरान शरीफ की आयतों का अर्थ नहीं मालूम। जो कुरान शरीफ की आयतों का अर्थ जानता है, उन्हें उलेमा कहते हैं, वे कुरान शरीफ की बारीकियों को समझा सकते हैं। इसके बावजूद भी प्रतिवादीगण की ओर से कोई भी उलेमा पेश नहीं किया गया, जो न्यायालय को यह बताता कि इस्लाम धर्म में भैंस-भैंसे की कुर्बानी करना कहाँ पर लिखा है और कुर्बानी करना हर इस्लाम के बंदे का फर्ज है। इस व्यक्ति से स्पष्ट प्रश्न पूछा गया कि कुरान शरीफ की किस आयत में कुर्बानी करना फर्ज लिखा है, इस साक्षी ने स्पष्ट स्वीकार किया कि उसे पता नहीं है कि कुरान शरीफ की किस आयत में कुर्बानी फर्ज लिखा है, बल्कि यह फिरंगी महल अथवा नदवे वाले हैं, उसके लोग जो बताते हैं, वह करता हूँ। फिरंगी महल अथवा नदवे का उलेमा अथवा मुल्ला कोई भी मेरे समक्ष परीक्षित नहीं किया गया, जो इस बात को स्पष्ट करता कि इस्लाम मजहब में बकरीद के अवसर पर भैंस-भैंसे की कुर्बानी करना परमावश्यक है।

इस साक्षी ने यह भी स्पष्ट स्वीकार किया है कि कुर्बानी अपनी सबसे अजीज चीज की दी जाती है। उदाहरण के लिए हजरत इब्राहिम ने अपने लड़के की कुर्बानी बकरीद के दिन दी थी, परन्तु जब इब्राहिम ने अपनी आँखों से पट्टी खोली तो दुम्मा बना हुआ निकला। इससे अधिक से अधिक तात्पर्य यह निकाला जा सकता है कि दुम्मा को कुर्बानी करने के लिए इस्लाम में प्राविधान है, परन्तु दुम्मा का तात्पर्य भैंस, गाय से नहीं हो सकता। पारा १७ आयत २६ से ३८ तक ऊँटों की कुर्बानी का प्राविधान सूरे हज्ज में दिया गया है। इसी में आयत ३२ में कहा गया है कि तुम्हें चौपायों से एक खास वक्त तक फायदे हैं, जो तुम सवारी या दूध से उठा सकते हो। फिर उसे पुराने ढाबे काबा तक कुर्बानी के लिए जाना है। आयत २७ में कहा गया है-और लोगों में हज्ज के लिए पुकार दो कि हमारी तरफ दुबले-दुबले ऊँटों पर सवार होकर दूर-दूर की राहों से चलकर आवें। आयत २७ में-अपनी भलाई की जगह के लिए हाजिर है। अल्लाह ने तो मवेशी उन्हें दिये हैं, उन पर जबह (बलिदान) के समय अल्लाह का नाम लें। उनमें से असहायों, दीन-दुखियों और फकीरों को खिलाओ। आयत २८ में चाहिए कि अपना मैल-कुचैल उतार दें और अपनी मन्नतें पूरी करें और इस तबाक की परिक्रमा करें।

यह सत्य है कि पाक कुरान शरीफ में कुर्बानी के लिए चौपायों के लिए कहा गया। पाक कुरान शरीफ में एक स्थान निश्चित कर दिया गया है और वह काबा के सामने पूरब की ओर है। कुर्बानी करने वाले जानवर का सिर काबा की ओर होगा और अल्लाह का नाम लेकर जिबा किया जायेगा। पाक कुरान शरीफ में स्पष्ट कहा गया है कि उन्हीं चौपायों की कुर्बानी दी जायगी, जो आपके प्रयोग के लिए बेकार हो गये हैं अर्थात् दूध नहीं देते हैं और जो बोझ ढोने के लायक नहीं हैं, परन्तु डाक्टर ने इस वाद में स्वयं जानवरों को सर्टीफिकेट दिया और स्वस्थ जानवरों को ही मारने के लिए यह प्रमाणपत्र दिया जाता है। ग्राम सहिलामऊ

कभी काबा नहीं बन सकता और इस प्रकार की दी गई कुर्बानी भैंसों आदि की पाक कुरान शरीफ में अंकित हैं, इसमें सन्देह है। पाक कुरान शरीफ का उद्देश्य अनुपयोगी जानवरों की कुर्बानी से है, जिससे लोग उनके माँस आदि से अपना पेट पालन करते हैं, न कि ह्रष्ट-पुष्ट जानवरों की कुर्बानी करना, जिसके लिए डाक्टरी सर्टीफिकेट की आवश्यकता है।

यहाँ पर यह कहना अनुचित न होगा कि धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों को अन्धविश्वास में बदलना कहाँ तक उचित है और अन्धविश्वास को भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ व २६ में प्रश्रय मिलेगा, यह सही नहीं है। हालाँकि उपरोक्त सभी आयतें साक्षी नं. ५ श्री मो. रफीकुद्दीन नहीं कह सके। इसलिए उन्हें इन आयतों का भी लाभ नहीं मिल सकता।

मेरे समक्ष विद्वान् अधिवक्ता प्रतिवादी ने मोहम्मद फारूक बनाम स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश आदि ए.आइ. आर. १९७० सुप्रीम कोर्ट पेज ९३ की नजीर प्रदर्शित की। यह नजीर वर्तमान वाद में लागू नहीं होती है। यह नजीर भारतीय संविधान के अनुच्छेद-१९ (जी) व्यापार करने के सम्बन्ध में है, अत: इसकी व्याख्या करना उचित न होगा।

मेरे समक्ष विद्वान् अधिवक्ता प्रतिवादी ने श्रीमद्पेरारू लाल तीर्थराज रामानुजा जी.एम. स्वामी बनाम स्टेट ऑफ तमिलनाडु ए.आई.आर. १९७२ सुप्रीम कोर्ट पेज १५८६ प्रदर्शित किया, जिसमें सरदार सइदेना तेहर शिक्यूरिटी शाहिद बनाम बाम्बे सरकार ए.आई.आर. सुप्रीम कोई पेज ५८३ पर विश्वास व्यक्त किया गया, जिसके अनुच्छेद ३४ में यह न कहा गया भारतीय संविधान के अनुच्छेद २५ व २६ में संरक्षणता केवल धार्मिक सिद्धान्त अथवा विश्वास को नहीं दी गई है। यह संरक्षणता वहाँ तक बढ़ाई जाती है जहाँ तक धार्मिक अक्षुण्यता प्रतिवादित करने में जो कृत्य किये जाते हैं और जिस प्रकार पूजा अर्चना त्योहारों के रूप में मनाई जाती है, जो धर्म का एक अभिन्न अंग है। दूसरा यह कि यह धर्म का आवश्यक अंग है अथवा धार्मिक अभ्यास है, यह विशेष धर्म के सिद्धान्तों एवं उसके अभ्यासों पर जो उस धर्म के अनुयाइयों द्वारा धर्म का अंग मानकर किया जाता है, पर निर्भर होगा। इस तथ्य को न मानने का कोई प्रश्न नहीं उठता १. यदि भैसों की बलि बिना बकरीद त्योहार मुसलमानों में नहीं मनाया जा सकता, तो निश्चय ही उन्हें भैसें की बलि की इजाजत देनी होगी, परन्तु इस आवश्यक अंग को प्रतिवादीगण सिद्ध करने में असफल रहे हैं। यदि भैंस-भैंसे की बलि विवादित ग्राम में होती रही होती तो निश्चय ही मेरे समक्ष अभिलेख प्रस्तुत किये गये होते, जबकि साक्षी सं. ५ ने स्वीकार किया है कि साक्षी नं. १ जो प्रतिवादी नं. ७ है, मस्जिद के मुतवल्ली होने के कारण इस सम्बन्ध में सभी अभिलेख रखते हैं। इस तथ्य से यह भी स्पष्ट होता है कि उस गाँव में रहने वाले मुसलमान अब तक भैंसे की बलि देकर ही बकरीद मनाते रहे हैं अथवा नहीं। बकरे दुम्मे की कुर्बानी करने के लिए वादीगण को भी कोई आपत्ति नहीं है।

शेष भाग अगले अंक में.....

पृष्ठ संख्या ३१ का शेष भाग.....

%ज्यदेवी आर्या, अजमेर १९. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर २०. पुनीत वर्मा, दिल्ली २१. श्री रामअवतार सूरत, गुजरात २२. श्री विष्णुप्रसाद सोमानी, अजमेर २३. डॉ. रमेश मुनि व श्रीमती उषा आर्या, अजमेर २४. श्री ईश्वर सिंह, रेवाड़ी, हरियाणा २५. श्री रमेशचन्द आर्य, जीन्द, हरियाणा २६. श्री विजय सिंह गहलोत व कंचन गहलोत, अजमेर २७. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. २८. श्रीमती उमा मोंगा, दिल्ली २९. डॉ. रवि दुबे, दिल्ली ३०. श्री विशनदास शर्मा, शिमला ३१. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ३२. श्रीमती शारदा बाई, मन्दसौर, म.प्र. ३३. श्रीमती प्रमिला आर्या, रेवाड़ी, हरियाणा ३४. श्री राधे, रेवाड़ी, हरियाणा ३५. मेहता माताजी, अजमेर ३६. श्री बद्री प्रसाद पंचोली व श्रीमती कमला पंचोली, ३७. श्री बलवीर सिंह बत्रा व श्रीमती शान्ता बत्रा, दिल्ली ३८. स्व. श्री रोशन लाल ३९. सुमृथचरण, अजमेर ४०. श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद, गुजरात ४१. श्री राजवीर कुशलदेव शास्त्री, पुणे, महाराष्ट्र ४२. श्री सीयाराम आर्य, कानपुर, उ.प्र.।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। ~~परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।~~

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर की पुस्तकों की राशि ऑनलाईन जमा कराने हेतु

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

प्रत्युत्तर-अथ-सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप तौल

- आचार्य दार्शनेय लोकेश

परोपकारी पत्रिका के अगस्त द्वितीय अंक में प्रकाशित श्री शिवनारायण उपाध्याय के लेख 'अथ सृष्टि उत्पत्ति व्याख्यास्याम की माप तौल का उत्तर' पर केन्द्रित मेरा यह लेख लेखक के विचार और तर्कों से असहमति ही नहीं, असहमति के आधार तथ्यों का खुलासा भी है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका-वेदोत्पत्ति विषय (प्रकाशक-आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, पेज १६) में 'ते चैकस्मिन् ब्राह्मदिने १४ चतुर्दशभुक्ता भोगा भविन्त' जो लिखा है तो उसका अर्थ ये नहीं है और न हो सकता है कि एक ब्राह्मदिन में १४ मन्वन्तर का काल ही भोगकाल होता है। वस्तुत: ऐसा कहने से स्वामी जी का तात्पर्य है कि ६ पूरे और व्यतीत भाग के साथ ७ वें वर्तमान तक बीत चुके हैं (भुक्त ना कि भुक्ता जैसा कि उपाध्यायजी ने लिखा है) तथा वर्तमान वैवस्व मन्वन्तर का शेष और सावर्णि आदि ७ जो आगे भोगने बाकी हैं अर्थात् भोग्य कुल १४ ही मन्वन्तर होते हैं। इससे कम या इससे अधिक महर्षि के कथन का कुछ भी अन्यथा अर्थ नहीं है।

श्री शिवनारायण उपाध्याय का ये लिखना गलत है कि ''अर्थात् भोगकाल १४ × ७१ = ९९४ चतुर्युगी ही हैं। स्वामी जी ने सृष्टि-उत्पत्तिकाल की गणना उस समय से की है जब मनुष्य उत्पन्न हुआ।'' यही नहीं, पूर्णतया विरोधाभास के साथ आगे लिख रहे हैं, ''मनुष्य के उत्पन्न होने के साथ ही चार ऋषियों के द्वारा परमात्मा ने वेद ज्ञान दिया। परन्तु सृष्टि-उत्पत्ति प्रारम्भ होने से लेकर मनुष्य की उपत्ति होने तक का व्यतीतकाल को उन्होंने गणना में नहीं लिया।'' अगर यह बात है और सृष्टिकाल के कुछ भाग को गणना में नहीं लिया गया है तो महर्षि की दी हुयी गणना १९६.....को सही कैसे कहा जा सकता है? काल गणना के आवश्यक किसी भाग को छोड देना अर्थात् गणना का गलत होना। लेकिन ऐसा है नहीं। मेरे अनुसार महर्षि ने एक भी बात सिद्धान्त से हट कर नहीं कही है। मेरे देखने में वे सिद्धान्ततया शत प्रतिशत सही हैं और अगर ऐसा है तो १९६..... की गणना में एक टंकण या लेखन-त्रुटि स्पष्ट है।

अब एक और सन्दर्भ की बात- परोपकारिणी महासभा के सत्प्रयासों से जून २०१७ में अजमेर में एक विद्वत्सभा बुलाई जा रही है। सभा में हम गणितीय तौर पर सिद्ध करके दिखाएँगे कि किस तरह १९६.....गलत है और १९७.....ही सही है। एक बात सभी को समझनी होगी कि सूर्य सिद्धान्त के प्रथम अध्याय के आधे भाग मात्र को पढ़कर ही कोई किसी गणना विषयक चीज को लागू नहीं कर सकता है। जो भी सृष्टि संवत् दिया जाएगा उसे पूरे सूर्य सिद्धान्त पर आधारित और सूर्य सिद्धान्त से ही सिद्ध या प्रमाणित होना होगा। इसके अभाव में सृष्टि संवत् को कभी भी सही नहीं किया जा सकेगा।

इस सन्दर्भ में वेदवाणी (वर्ष ४३ अंक ८, पृष्ठ १५-१७) में प्रकाशित वैदिक विद्वान् श्री आदित्यपाल सिंह आर्य का लेख एक सार्थक प्रयास है। सूर्य सिद्धान्त के अध्याय १ श्लोक २४ के जिस श्लोक की संगति न लगा सकने की चर्चा उपाध्याय जी कर रहे हैं, उस श्लोक का काल गणना की सिद्धि में व्यवहार अपेक्षित ही नहीं आवश्यक भी है और ऐसा ही श्री आदित्यपाल सिंह आर्य ने किया है।

सूर्य सिद्धान्त के इसी श्लोक १/२४ में सृष्टि निर्माण में लगे कुल समय (४७४०० दिव्य वर्ष या ४७४०० × ३६० अर्थात् १७०६४००० कुल मानव वर्ष) का ज्ञान दिया हुआ है। ऐसे में हम सृष्टि निर्माण का काल कुछ और कैसे ले सकते हैं?

एक तरफ तो स्वामी जी विधिवत् संकल्प मन्त्र के माध्यम से कह रहे हैं (क्षणमारभ्य कल्पकल्पान्तस्य गणित विद्यया स्पष्टं परिगणितं कृतमद्यपर्यन्तमपि क्रियते.....ज्ञायते चात:.....) कि कल्प आरम्भ के क्षण से लेकर गणित विद्या से स्पष्ट गणित किये हुए आज पर्यन्त के प्रत्येक दिन का उच्चारण किया जाता है, और उनकी अद्यतन गणना का ज्ञान किया जाता है और दूसरी तरफ ये महोदय कह रहे हैं कि सृष्टि उत्पत्ति से लेकर मनुष्य उत्पत्ति तक के

समय को स्वामी जी ने गणना में नहीं लिया है। मुझे तो ये भी समझ नहीं आ रहा है कि ये बात कहना स्वामीजी पर दोष आरोपित करना है या कि उनकी प्रशंसा करना है?

श्रीमान् उपाध्याय जी से यह जानना जरुरी है कि वेद मनुष्य की शत वर्षीय अगर आयु बताता है तो क्या ये मानना होगा कि गर्भ काल के २८० दिन काटने के बाद बचे ९९ वर्ष २ माह २० दिन ही (भोग काल अर्थात् वास्तविक जीवंतता का समय) 'शतायुर्भव' का तात्पर्य है? नहीं ऐसा कदापि नहीं है। सूर्य सिद्धान्त और मनुस्मृति का सच ये है कि ब्रह्मा की आयु १००० चतुर्युगी है तो ये ब्रह्मा की जीवंतता का अर्थात् क्रियाशीलता का अर्थात् भोग का काल ही है।

हम 'भोग काल' के श्री उपाध्याय वाले आशय में कहीं से कहीं तक औचित्य नहीं देख रहे हैं। ये श्रीमान् जबरदस्ती अपनी बात सिद्ध करना चाहते हैं। जब स्वामी जी स्पष्ट लिख रहे हैं कि एक ब्राह्म दिन की कल्प संज्ञा होती है और १००० चतुर्युगी के बराबर है तो फिर ९९४ ही चतुर्युगी के काल को ही ब्राह्म दिन अर्थात् कल्प के भोग काल के रूप में कैसे कह सकते हैं? अस्तु, स्पष्ट हुआ कि कल्प का भोगकाल १००० चतुर्युगी बिना पूरा हुए नहीं कहा जा सकता है।

ऋग्वेद १-१५-८ के माध्यम से श्री उपाध्याय कहना चाहते हैं कि प्रत्येक कार्य स्वरूप के उत्पन्न होकर नष्ट होने में समय तो लगता ही है। ये तो सभी मानेंगे इसमें तर्क की बात ही क्या है? किन्तु किसी कार्य में लगे काल को गणित में न लिया जाये ये कहाँ की काल गणना हुयी श्रीमान्?

हम इस लेख के माध्यम से समस्त आर्य जगत् के सभी विद्वानों से निवेदन करते हैं कि वे स्वयं भी निम्नलिखित दो बातों को अधिकार और प्रमाणपूर्वक स्पष्ट करें-

१. कि महर्षि ने सृष्ट्यादि गणना मानवोत्पत्ति से शुरु की है और ''सृष्टि उत्पत्ति प्रारम्भ होने से लेकर मनुष्य की उपत्ति होने तक के व्यतीतकाल को उन्होंने गणना में नहीं लिया है।''

२. कि एक ब्राह्म दिन १००० चतुर्युगी का है, किन्तु उसका वास्तविक भोग काल केवल ९९४ चतुर्युगी ही है।

हम पहले ही अपनी मान्यता और जानकारी स्पष्ट कर चुके हैं कि महर्षि के अनुसार सृष्टि, वेद और मानव उत्पत्ति एक ही साथ हैं, अलग-अलग नहीं। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका 'अथ वेदोत्पत्ति विषय' में स्वामी जी, ''इति सूर्य सिद्धान्तादिषु संख्यायते। अनया रीत्या वर्षादि गणना कार्येति'' लिखते हैं। अस्तु, उन्होंने सूर्य-सिद्धान्त आदि ग्रन्थों के अनुसार ही सृष्ट्यादिकाल गणित किया है और स्वाभाविक है कि सूर्य सिद्धान्त में दी हुयी १५ संधियों के कुल योग से बनी ६ चतुर्युगी के गणित को कैसे भुलाया जा सकता है? विद्वज्जन इस पर गंभीरता से विचार करें।

आर्य जनों में कल्पादि / सृष्टियादि गणना ही नहीं, कुछ अन्य बातों की भी गम्भीर विसंगति चल रही है। इन सभी का अन्तिम तौर पर निराकरण कर लेना आवश्यक है। इन विसंगतियों को हम अलग से लेख द्वारा स्पष्ट करना चाहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जब तक मनुष्य सुख-दुःख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

हाल-ए-कश्मीर

- डॉ. रामवीर

काश्मीर में होने वाले
रोज-रोज के उत्पातों की,
जड़ में बढ़ती हुई रकम है
उग्रवादियों के खातों की।

तुच्छ लाभ हानि पर आश्रित
वृथा राजनीतिक नातों की,
दु:खद कहानी है कश्मीरी
आततायियों के घातों की।

घोर उपेक्षा अगर न होती
कुछ गम्भीर सवालातों की,
तो शायद नौबत न आती
भयावह इन हालातों की।

जो बातों से नहीं मानते
उन्हें जरुरत है लातों की,
बन्द करो वाहियात प्रथाएँ
दुष्ट जनो से मुलाकातों की।

धीरज खत्म हुआ जाता है
सुन-सुन खबर खुराफातों की,
आखिर कोई तो हद होगी
ऐसी बेहूदा बातों की।

जिनके मन में कमी रही है
भारतीयता के भावों की,
वे ही तो बातें करते हैं
क्षेत्रवाद औ, अलगावों की।

जब चलती है बात पंडितों
को पहुँचाए गए घावों की,
तो स्वयमेव उघड जाती है
पोल सैक्युलरिस्टों के दावों की।

ग़जल

- डॉ. रामवीर

मस्रुफ़[१] खुशामद में क्यों हैं
मुल्क के सब आला अदीब[२]।
जो रहे कभी रहबरे क़ौम
क्यों हुए हुकूमत के नक़ीब[३]।

इस बदली हुई फ़ज़ा में अब
हैरान उसूलों के अक़ीब[४]।

यह वक्त नहीं है ग़फ़लत का
हालात हुए बेहद महीब[५]।

नाम जम्हूरियत है लेकिन
काबिज हैं हाकिमों के असीब[६]।

लाचार रिआया के चेहरे
हो चुके हैं मानिंदे ज़बीब[७]।

इस दौरे मल्टिनेशनल में
रोजी को तरसता है ग़रीब।

कब छटेंगे गर्दिश के ग़ुबार
कब जगेगा बेबस का नसीब।

१. व्यस्त २. साहित्यकार ३. चोबदार ४. अनुयायी ५. भयानक ६. सन्तान ७. मुनक्काड्ड

- ८६, सैक्टर- ४६, फरीदाबाद-१२१०१०

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

।।ओ३म्।।

वेद गोष्ठी २०१६ के लिए निर्धारित विषय

दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता

उपशीर्षक

१. महर्षि दयानन्द का विशिष्ट दार्शनिक चिन्तन
२. महर्षि दयानन्द का ईश्वरविषयक चिन्तन
३. ईश्वर एवं ब्रह्म, ईश्वर/ब्रह्मस्वरूप, कर्तृत्व
४. महर्षि दयानन्द का जीव विषयक चिन्तन (जीव का स्वरूप, संख्या, परिमाण, सादि-अनादि, जीव-ब्रह्म सम्बन्ध, अंशांशिभाव, जीव-जगत् सम्बन्ध, जीव का कर्तृत्व एवं भोक्तृत्व, मुक्ति में जीव का स्वरूप, जीव के मौलिक गुण, जीव-आत्मा-जीवात्मा)
५. महर्षि दयानन्द का जगत् विषयक चिन्तन
६. मध्यकालीन आचार्यों (शङ्कर एवं रामानुज) केसाथ दयानन्द के दार्शनिक विचारों की तुलना
७. स्वर्ग/मोक्ष

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. संहिता
२. उपनिषद
३. षड्दर्शन
४. दयानन्द दर्शन - डॉ. वेदप्रकाश गुप्त-मेरठ
५. दयानन्द दर्शन - डॉ. श्री निवासशास्त्री - कुरुक्षेत्र वि.वि.
६. त्रैतवाद का उद्भव और विकास-डॉ. योगेन्द्रपाल शास्त्री
७. आदर्श त्रैतवाद-राजसिंह भल्ला -सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
८. महर्षि दयानन्द विरचित ग्रन्थ
९. जीवात्मा - गंगाप्रसाद उपाध्याय-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली
१०. आत्मदर्शन - महात्मा नारायण स्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र.सभा-दिल्ली
११. आस्तिकवाद-पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय-घूडमल प्रहल्लादकुमार - हिण्डौन, राजस्थान
१२. मृत्यु और परलोक म. नारायणस्वामी - सार्वदेशिक आ.प्र. सभा, दिल्ली
१३. अनादि तत्त्व-पं. चमूपति
१४. वैदिक स्वर्ग- पं. चमूपति
१५. महर्षि दयानन्द के दार्शनिक मन्तव्य-डॉ. कर्मसिंह आर्य
१६. ईश्वर प्रत्यक्ष -पं. मदनमोहन विद्यासागर
१७. ईश्वरसिद्धि-डॉ. श्रीराम आर्य
१८. महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र व्यवहार-परोपकारिणी सभा, अजमेर

स्तुता मया वरदा वेदमाता-४१

सप्तमर्यादाः कवयस्ततक्षुस्तासामेकामिदभ्यंहुरो गात्।
आयोर्ह स्कम्भ उपमस्य नीडे पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ।।

– ऋ. १०/५/६

परमेश्वर ने मनुष्य के अन्दर दो सत्ताओं को समाविष्ट कर रखा है। देखने में प्रत्येक प्राणी के पास एक शरीर है, जो उसकी पहचान है। पहचान नष्ट हो जाये तो कोई शरीरधारी उसे खोजकर नहीं ला सकता। जो इस शरीर से पहचाना जाता है, वह जीवात्मा है। आत्मा अपनी इस पहचान से ही जाना जाता है कि वह अपनी संसार यात्रा से कहाँ तक पहुँचा है।

शरीर तो सभी प्राणियों के पास है, एक-एक प्रकार के शरीर धारण किये भी बहुत सारे प्राणी होते हैं और फिर प्राणियों के प्रकार, नस्ल भी बहुत हैं। ये दो बातें संकेत करने के लिये पर्याप्त हैं कि सभी प्राणी यात्री हैं और प्रत्येक की यात्रा की पहुँच भिन्न-भिन्न चरणों में चल रही है। हमारे लिये इस यात्रा के कारण कोई प्राणी ऊँचा या नीचा हो सकता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में तो सभी उस तक पहुँचने के इच्छुक यात्री हैं, कोई उससे बहुत दूर है तो कोई उसके निकट है।

संसार को देखने से दो बाते समझ में आती हैं- जीव बहुत प्रकार के हैं, उसी प्रकार संसार में सबकी अनिवार्यता और उपयोगिता भी है। जैसे भवन के निर्माण में एक व्यक्ति भवन की आवश्यकता वाला है, वह अपने को उसका स्वामी समझता है। वह अपने को निर्माण करने वाला कहता है। स्वयं को स्वामी भले ही कहे, परन्तु वह उसका निर्माण नहीं कर सकता। भवन का निर्माण करने के लिये कुछ व्यक्ति उसके विचार को क्रियान्वित करने का स्वरूप बताते हैं। हम उन्हें वास्तुकार कहते हैं। वे उसे उसकी इच्छा के अनुकूल भवन का चित्र बनाकर देते हैं। कुछ लोग लोहा, मिट्टी, लकड़ी, पत्थर से उस स्वरूप को आकार देते हैं। दूसरे लोग उसे उपयोगी बनाते हैं, तीसरे उसकी सुन्दरता को चित्रित करते हैं, वैसे ही संसार में समस्त प्राणियों की भूमिका बनती है। जैसे हम आशा करते हैं कि सरकार-राज्य इस देश के नागरिकों को कार्य दे और उनके पुरुषार्थ तथा बुद्धि का सदुपयोग ले और उसे सार्थक से करे। उसी प्रकार परमात्मा ने भी संसार में जितने कार्य हैं, उतने प्रकार के प्राणियों की रचना की है। कोई भी प्राणी अनुपयोगी नहीं है, यदि अनुपयोगी होता तो न तो उसको उसके कर्मों का फल मिलता, न संसार के वे विशेष कार्य दूसरा कर सकता।

इन प्राणियों में परमेश्वर ने अपने कार्यों के प्रति कुछ को उत्तरदायी बनाया है, कुछ को उत्तरदायी नहीं बनाया। सांसारिक व्यवस्था में कुछ लोग निर्णय करने वाले होते हैं, कुछ लोग अनुपालना करने वाले। उत्तरदायी निर्णय करने वाले माने जाते हैं। कार्य के अच्छे-बुरे, हानि-लाभ के लिये अनुपालना करने वालों को उत्तरदायी नहीं माना जाता। जो उत्तरदायी है, उसे ही पुरस्कार और दण्ड मिलता है। अनुपालना करने वाले को केवल उसके जीवन यापन के साधन मिलते हैं, जिसे हम मजदूरी कहते हैं।

इसी प्रकार संसार में भोग-योनि के प्राणी अनुपालना करने वाले हैं। परमेश्वर ने उन्हें संसार में जिस कार्य के योग्य बनाया है, वह स्वयं उनके जीवन से पूर्ण होता है और उनके जीवित रहने के उपाय परमेश्वर ने उन्हें दिये हैं। उनके कार्य में बाधा पहुँचाना, उनके जीवन को मध्य में समाप्त करना, उन्हें कष्ट देना- ये कार्य मनुष्य अपने विवेक से करता है, इसके लिये मनुष्य ही इसके परिणाम का उत्तरदायी बनता है। संसार में मनुष्य से भिन्न सारे प्राणी इसी श्रेणी में आते हैं। अतः इनको भोग-योनि कहा जाता है। इनके कार्य का निर्णय परमेश्वर ने इनके जीवन के साथ किया है। अतः वही उत्तरदायी है।

क्रमशः .....

आर्यजगत् के समाचार

१. अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन- नेपाल की राजधानी काठमांडौ में पहली बार नेपाल आर्यसमाज केन्द्रीय समिति द्वारा अन्तर्राष्ट्रिय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उपरोक्त आयोजन दि. २०, २१ व २२ अक्टूबर २०१६ को टुँडिखेल, काठमांडौ, नेपाल में आयोजित किया जा रहा है। महासम्मेलन की विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें दूरभाष - ००९७७-१-४४८७७९४, ००९७७-९८४१३०३४४०, वेबसाइट- www.nepalaryasamaj.org

२. जन्माष्टमी पर्व मनाया- २५ अगस्त २०१६ को आर्यसमाज मगरा पूँजला, जोधपुर, राज. में श्री जगदीशसिंह आर्य के मार्गदर्शन में जन्माष्टमी पर्व मनाया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव तथा मुख्य वक्ता श्री विमल शास्त्री थे। उक्त आयोजन में सैंकड़ों स्त्री-पुरुषों ने उल्लासपूर्वक भाग लिया एवं भजन, प्रवचन का लाभ प्राप्त किया।

३. जन्म शताब्दी मनाई- पंडित नारायण सहाय दीक्षित की जन्म शताब्दी के कार्यक्रम का दि. १२/९/२०१६ को यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ समापन हुआ। आर्य समाज राजगढ़, जि. अलवर, राज. के तत्वावधान में संचालित इस ९ दिवसीय कार्यक्रम में यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वेदोपदेश हुए। आर्य शिरोमणि पं. विनोदीलाल दीक्षित यज्ञ के आचार्य थे। स्वामी देवानन्द सरस्वती इस कार्यक्रम के संरक्षक थे।

४. वार्षिकोत्सव एवं यज्ञ- युगदृष्टा, आर्यसमाज के प्रवर्त्तक तथा सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवनकाल में १३ फरवरी १८८१ ई. को स्थापित राजस्थान के पुराने और प्रतिष्ठित आर्यसमाज अजमेर का १३५वाँ वार्षिकोत्सव तथा यजुर्वेद पारायण यज्ञ आगामी १२ से १६ अक्टूबर २०१६ तक आर्य समाज भवन केसरगंज, अजमेर में धूमधाम से हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जायेगा। इस महोत्सव में विद्वानों के भजन व प्रवचन होंगे।

५. शिविर सम्पन्न- मुस्लिम बहुल मालाबार क्षेत्र के ग्राम कारलमन्ना, जिला पालाक्काड, केरल में पं. ऋषिराम आर्योपदेशक महाविद्यालय गुरुकुल का संचालन विगत एक वर्ष से किया जा रहा है। वर्ष में शिविर उत्सव वेदप्रचार आदि के २-३ कार्यक्रम करते हैं। वेद कक्षा, संस्कृत कक्षा, यज्ञ सत्संग का आयोजन तथा शुद्धि कार्यक्रम आदि होते रहते हैं। आर्य हिन्दू श्रद्धालुओं को वैदिक धर्म व आर्यसमाज से परिचित करवाने हेतु इस बार १६ से १८ सितम्बर २०१६ तक सत्यप्रकाश वैदिक कार्य शाला शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें आर्य समाजिक सिद्धान्तों को स्पष्ट करने के लिये होशंगाबाद, म.प्र. के आचार्य श्री आनन्द पुरुषार्थी आमन्त्रित किये गये। स्थानीय विद्वानों में डॉ. पी.के. माधवन-संस्कृत प्रवक्ता एवं डॉ. श्रीनाथ करियाट-षोडश संस्कार वेत्ता आदि विद्वान् थे। कार्यक्रम की मुख्य धुरी गुरुकुल के आचार्य श्री वामदेव (आर्ष गुरुकुल ऋषि उद्यान अजमेर के स्नातक) थे।

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दुःख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४